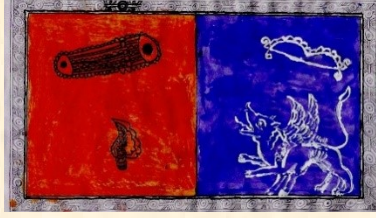
ISSN 2229-547X VIDEHA
विदेह: ३५५ म अंक ०१ अक्टूबर २०२२ (वर्ष १५ मास १७८ अंक ३५५)
(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई- पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



 भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ- प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई- पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।



समानान्तन पनम्पनाक विश्यापगि-विग्र विदहृ सम्मानसँ सम्मानिग श्री पनकलाल मण्डल द्वाना मैथिली राषा जगज्ञननी सीगायाः राषा अासीग्। हनूमन्तः उक्तवान-मानूषीमिहृ संस्कृगाम्। अक्षन खम्ा (आखन खाक्षृ) गिक्अन खन्तहि काञि गस् किन्चिवल्लि पसनञ्ज। अक्षन खम्ानम्ह जउ मश्लेश वधि न दञ्ज॥ (कीर्गिलगा प्रथमः पल्लवः पहिल दाहा।) मान आखन नूपी खाक्ष निर्माध कइ उाञ्जपन (गद्य- पद्य नूपी) मंव ऊँ नैं वाह्नल जाय गँ ग्रे त्रिगुवननूपी ऊग्रम उाकन कीर्गिनूपी लन्ही कना पसनग।

अनूक्रम

ग्रे अंकम अूक्षि: -

१. सम्पादकीय/ अंक ३७४ पन टिप्पधी

१. १. सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकून

१. २. ऄंक ३ा४ पन टिप्पधी

२. गद्य खण्ड

२. १. निर्मला कर्ध- ऄग्नि शिखा (राग- ा)

२. २. डा. विपिन कुमान झा- महाकवि रास प्रधीत कर्धरानम् मैथिली ऄनुवाद (राग- ३)

२. ३. नवीन्द्र नानायध मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास) - १२म खप

२. ४. प्रमशंकन झा " पवन" - लोक ऄस्थाकँ कँत्र नवादा कँ माँ हृयहृ दवी रगवती स्थान

२. ा. नाशन जनकपुनी- कथानक

२. ६. भुवनश्वन चौनसिया " भुनश" - दू टा वीहनि कथा

२. ा. कुमान मनाज कश्यप- २ टा लघुकथा

२. ८. शंभु कुमान सिंह- थीमक खाज

२. ९. शिव शंकन- कथा- पाथन

२. १०. ऄाशीष ऄनविन्नान- पसनल ग्रम खण्म हृगें४ गजलक संदर्भ

३. पद्य खण्ड

३. १. नाज किशान मिश्र- कद्र, उपनाग दिऄूञ्ज ककना?

३. २. शिव कुमान झा टिल्लू- ३ टा पद्य

३. ३. समना कुमानी- मिथिला हम्मन

३. ४. ञा जियाउन नहमान जारूनी- २ टा ञ्जाजाद गजल

४. संस्कृन खण्ड

४. १. ञा. दीपिका- वम्पूसाहिन्ययश्श विलासऽ (द्विनीयाच्छवासऽ)



१. सम्पादकीय/ अंक ३५४ पर टिप्पणी

१. १. सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकुर

१. २. अंक ३५४ पर टिप्पणी

१. १. गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक

सम्पादकीय



गजेन्द्र ठाकुर

१

साहित्य अकादमी, दिल्लीक मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन

पूर्व रूपसँ शुरू प्रक्रियाक तहत साहित्य अकादमी मैथिलीक दूटा एसोसियेशन (साहित्य अकादमीक शब्दावलीमे तथाकथित मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन) कँ अपन लिस्टसँ हटा देलक आ तीन टा गैर लिटरेरी एसोशियेशन आन जोड़ि देलक। सुखायल जाइत मैथिली साहित्यक मूल धाराक ' राम नाम सत' क प्रारम्भक रूपमे एकरा देखल जा रहल अछि।

पुरनका लिस्ट: -

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002;

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004;

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001;

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007;

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004;

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

ऊे म सँ क्रम १ ञ्ा ६ कन उसासियश्नक मान्यणा नङ्क कइ रदल ।गल ञ्ा नीचाँक क्रमांक ७, ६ ञ्ा ण कँ ञाड़ि रदल ।गल। ञ्ामद ३- २=१. नाकसान- "सूखायल ञाङ्गन मैथिली साह्िन्यक मूल धानाक ' नाम नाम सग' क प्रानम्ह" ।

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila

Sanskritik Parishad, Roseberi 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2 Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)
7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)
ज्ञाव कनें ऐ संस्था सर'कँ ख्यानसँ दखू, पहिलसँ ज्ञन्तिम मॅथिली पनामर्शदात्री समितिक ज्ञध्यक्षसँ ञ्त्रुल ञ्ञी संस्था सर' किछुञा कृञ्य लिटनेरी ज्ञसासियशन गँ नहिय टा ज्ञछि। वांग्नम ज्ञखना धनि दृञ्ञयटा लिटनेरी ज्ञसासियशन छॅ मुदा एकटा पदपन कन्ना लॅल सर' साहित्य ज्ञकादमी मॅथिली पनामर्शदात्री समितिक पूर्व ज्ञध्यक्ष एक एक टा ज्ञपन संस्था घासियबॅग (गला।
ञ्ञी सर'टा कुकर्म हमन ज्ञंग्रजी पाथी A Parallel History of Maithili Literature म ज्ञरि'लखित कएल ञा नहल ज्ञछि।

२

वर्ध प्रकनध राष्ट्य- गुमिका
दिल्लीम मॅलानंगक एकटा समीनानम ब्र. माहन रानब्राज मुल धानाक ब्याकनधाचार्यकँ सम्बाधित कइ कहनें नहथि- ' मॅथिलीम एकटा ब्याकनध किए नॅ ज्ञछि? की हम सर' ऐ ञाकनक नॅ छी ञ हमना सर'कँ मॅथिलीम ज्ञपन एकटा ब्याकनध 'टए?'
मुदा मुल धाना हिन्दी ज्ञा संस्कृतक ब्याकनधम विप्पी लगा कइ ज्ञा ञ्ञी संशाधित कइ ञ- हिन्दीम ' हम' ' वहुवचन' हाञ्ञए मुदा मॅथिलीम ' एकवचन' - ज्ञपन कर्तब्यक ञ्ञगिश्री मानॅग ज्ञछि। मुदा समानान्तन धानाक (गाविन्नाचार्यजी ऐ गनहक रुँट्ज्ञा ब्याकनधक विनुद्ध सुत्रा ब्याकनधक निर्माध कलक्हि, स पाधिनि ञकाँ हिनकन घूमक्कान प्रवृत्तिक कानध सम्हव 'ल ज्ञछि।
ञना संस्कृतम दक्षिध रानगक ' नीन' ज्ञा उत्तन रानगक ' ञल' दुनू पानि

एहि प्रयुक्त होइत आ सम्भाषण संस्कृतमे ओ अहाँ दक्षिण भारतीयकेँ ' अहम् नीरं पीवामि' सिखबौ आ उत्तर भारतीयकेँ ' अहम् जलं पीवामि' तँ नीक माष्टर कहबौ आकि नै. . ?
गोविन्दाचार्य- पं. बाल गोविन्द ' आर्य' प्रसिद्ध गोविन्द यादवक वर्ण प्रकरण भाष्य- भूमिका (मैथिली व्याकरण) सेहो माष्टर साहेब सभ एहि गुणकारी छथि।

३
श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक उपन्यास पंगुकेँ साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित कएल गेल। विदेह ई- पत्रिकामे ९ खण्डमे ई उपन्यास २०१८ मे ई- प्रकाशित भेल आ फेर ई संकलित भेल विदेह- सदेह २१ मे। आब ई पोथी विदेह पटलमे सेहो उपलब्ध अछि।

१. २. अंक ३५४ पर टिप्पणी

डॉ कीर्तिनाथ झा

प्रिय गजेन्द्र जी,

अपनेक विपरीत परिस्थिति मे वजन घटयबा मे अहाँक सफलता अपनेक प्रेरक अछि। अहाँक ई अनुभव आओर अधिक व्यक्तिक संग साझा होबाक चाही।

हार्दिक शुभकामनाक संग,

सादर

हेमन्त दास (एम. बी. ए. , एन. एम. आइ. एम. एस. , मुम्बई)

नीक पत्रिका अछि। आशीष अनचिन्हारक छोट- छोट बहरमे गजल बड्ड नीक अछि।

२. गद्य खण्ड

२. १. निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- १)

२. २. डा. विपिन कुमार झा- महाकवि रास प्रणीत कर्णरसनम् मैथिली अनुवाद (भाग- ३)

२. ३. नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास) - १२म खण्ड

२. ४. प्रेमशंकर झा " पवन" - लोक आस्थाकें केंद्र नवादा कें माँ ह्यहट्ट देवी भगवती स्थान

२. ५. रोशन जनकपुरी- कथानक

२. ६. भुवनेश्वर चौरसिया " भुनेश" - दू टा वीहनि कथा

२. ७. कुमार मनोज कश्यप- २ टा लघुकथा

२. ८. शंभु कुमार सिंह- थीसक खोज

२. ९. शिव शंकर- कथा- पाथर

२. १०. आशीष अनचिन्हार- पसरल ग्रम खण्ड हरौड़ गजलक संदर्भ

२. १. निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (भाग- ७)



निर्मला कर्ण (१९६०-) , शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर, दरभंगा, सासुर - गाढ़ियारी (वलहा) , वर्तमान निवास - राँची, झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग मे बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन|

अग्नि शिखा (भाग - ७)

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण/ मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

चक्रवर्ती सम्राट पुरुरवा अपन राज्य सिंहासन पर आरूढ़ छलाह। हुनकर सभ सभासद सेहो अपन- अपन आसन पर विद्यमान छल। पुरुरवा के मुख पर चिंता क लकीर स्पष्ट दृष्टिगोचर होइत छल। प्रधानमंत्रीक मुख पर गंभीरता व्याप्त छल। राजा अन्य सभ राजा के पराजित कऽ चक्रवर्ती सम्राटक पद ग्रहण कऽ लेने छलाह। कखनो- कखनो कोनो दानव- राज प्रतिरोधक प्रयत्न करैत, मुदा प्रत्युत्तर में अश्वमेध यज्ञ होइत छल आ विश्वविजय करैत ओहि दानव- राज के पराजित कएल जाइत छल।
अहि बेर राजदूत सूचना देलक जे दानव राज केशि राजा के चुनौती दऽ रहल अछि। केशि अस्त्र- शस्त्र सँऽ सुसज्जित भय युद्ध करबाक वास्ते सौराष्ट्रक भूमि पर पदार्पण कऽ चुकल अछि। ओ युद्धाभ्यास कऽ रहल अछि अपन सेना के सँग। ई सुनि पुरुरवा के अत्यन्त क्रोध भेलनि ओ तुरत युद्धक करबाक लेल तत्पर भऽ गेलाह मुदा जखन दानव गण के मायावी शक्ति सँऽ मन्त्री सभ हुनका परिचित करौलक, तखन ओ चिंतित भऽ गेलाह। मायावी शक्ति सँऽ विजित होयबाक लेल अनेकों प्रकारक दिव्यास्त्रक आवश्यकता होयत, जे राजा लग नहि छल। राजा तऽ अपन बाहुबल आ अपरिमित सैन्य शक्ति के सँग युद्ध कौशल सँऽ अखनि धरि सभ युद्ध जितने छलाह। चिंताक मुख्य कारण यैह छल। एकरा वास्ते बेर- बेर देव गण पर आश्रित होनाइ राजा के स्वीकार नहि छल। ओ स्वयं ओहि मायावी शक्ति के मालिक होमय चाहैत छलाह।
ओना तऽ देवगुरु बृहस्पति सँऽ ओ विभिन्न शस्त्रास्त्र विद्याक पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करने छलैथ। मुदा एतबा सऽ हुनका संतुष्टि नहि छलैन, किएक तऽ स्वयं इन्द्र दानव सऽ पराजित भऽ गेल रहथि। दानव राज केशि सऽ देवगण सहित स्वयं इन्द्र पराजित भऽ चुकल छलैथ। फल स्वरूप स्वर्गक राज्य ओकर अधीन भऽ चुकल छल। इन्द्र आब ओकर कठपुतली मात्र रहि गेल छलाह। अहि दानव राज पर विजय प्राप्त करनाइ एतेक आसान नहि छल।
मन्त्री गण सँऽ विस्तृत सलाह कऽ राजा अपन प्रधानमन्त्री पर राज्य- भार सौंप देलनि आ स्वयं हिमवान् पर्वत कर दिशा में भगवान विष्णु के तपस्या

कनवा हेतु प्रश्थान कलनि, कानध ओ मात्र सर्वशक्तिमान विष्णु सs कूनका ओहि सर' दिव्यात्मक प्राप्ति र's सकैत छलनि, ओकन सहायता सs ओ त्रिलोक पन विजय प्राप्त कय सकैत छलाह। मूदा त्रिलोक- विजय कूनक उद्देश्य नहि छल, ओ मात्र भू- मन्डलक निष्कण्टक शासक वनs चाहैत छलाह।

- - - - -

सर' नाजा विक्र क पनित्याग कs पूनूनवा हिमालय पर्वतक श्री- शोभा देखैत आगू वढ़ल जाइत छलाह। मार्ग मँ ओ हिमालय सँs नि: सृत अथाह जल सs पनिपूर्ण गंभीन वेग सs प्रवाहित होइत अत्यन्त मनोहानिणी ऐनावती नदी क देखलनि। ओहि मँ अनेकानेक अप्सना आ गंधर्व जल- क्रीड़ा कनैत छल। दूसन कात तपस्वी सवहक आश्रम वनल छल। कात पूष्प आ अनेक विशाल वृक्ष सँs ओ आश्रम सूशोभित छल। मूदा नाजा क मान ओ दृश्य मोहित नहि कs सकल। ओ ओहि स्थान पन नहि ठहनलाह, सून्दन दृश्यावली देखैत ओ आगू वढ़ि गेलाह।
आव धवल- पीत वर्ण सँs यूक्त हिमवान पर्वत श्रेणी कूनक नेत्रक पनिधि मँ आवय लागल छल। ओ स्थान अनेक नदीक प्रवाह सँs यूक्त छल। नदीक कलकल निनाद सँs गुंजित छल ओ स्थान।
श्वेत वादलक मूकूट धानध कएने श्वेत वर्ण सs आच्छादित ओ पर्वत नर' मँ इन्द्रधनूष सन अनेकाँ वर्ण क विछौने छल। पर्वतक घाटी मँ सूर्य देव नूका- छिपी खेलैत छलाह। कतहू अनेकाँ विद्याधन क्रीड़ा मग्न छलाह तs कतहू किन्ननक गान होइत छल। कतहू- कतहू गंधर्व आ अप्सनाक संगीत- नृत्य होइत छल। ओहि मनोनम दृश्य क देखैत पूनूनवा आगू वढ़ैत नहलाह।
अचक्क एक स्थान पन नाजा सिंह क रूल- फूल खाइत देखलैथ। ओतहि निर्भय मूद्रा मँ अनेकाँ गाय- वकनी क चनैत देखलैथ ओ। ओहि ठाम दू- तीन छोट विप्र वटू क भूमि कोनियावैत ओ देखलैथ।
नाजा क वूसना मँ आवि गेलनि अहि जगह पन अवश्य कोनो महर्षिकआश्रम होयत। एक विप्र वटू सs पूछना पन कूनका ज्ञात र'लनि एतह महर्षि भृगु

कँ आश्रम अछि। राजा ओतहि ठहरबाक निश्चय कलैथ। आश्रम प्रांत मँ महर्षि भृगु राजा क अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक स्वागत कलनि तत्पश्चात हुनक एतह अयबाक उद्देश्य पूछलथि।
राजाक पवित्र उद्देश्य जानि प्रसन्न भs हुनका निकट मँ अवस्थित एक गुफा क अवलोकन करौलथि। ओ गुफा मालती लता सँs आच्छादित छल।
अनेक माणिक, मूँगा, सुवर्ण, चांदी इत्यादिक भंडार छल। मणि क कांति सँs ओ विलक्षण प्रकाश युक्त छल। लगहि मँ एक रमणीक पुष्करिणी देखाओल ओ निर्मल जल आ कमल दल सँs परिपूर्ण छल। राजा पुनः महर्षि भृगु क आज्ञा सs ओतहि तपस्या करबाक निश्चय कलैथ।
ओ अपन आहार क परित्याग कs देलनि। एक टाँग पर ठाढ़ भs भगवान विष्णु क ध्यान लगाओल आ तपश्चर्या मँ लीन भs गेलाह। बहुत दिन धरि ओ ओहि मुद्रा मँ तपश्चर्या करैत रहलाह। तपश्चर्या क अंतिम चरण मँ स्वर्ग सs आयल अप्सरा सबहक द्वारा विघ्न उपस्थित कएल गेल। सामान्य मनुष्य तs ओहि मँ रमि कs अपन उद्देश्य सs भटकि जैइतथि, मुदा पुनः ओ एखनि धरि ब्रह्मचारी छलाह, हुनका पर कनिको असर नहि परलनि। अप्सरा सबहक विभिन्न प्रकार कँ अश्लील चेष्टा देख कs ओ अनदेखी करैत रहलाह। गंधर्व आ अप्सराक मैथुन क्रिया क देखि आँखि बंद कs लैथ, मधुर गीत क आवाज पर कनिको ध्यान नहि दैथ। जखनि हुनका सबहक द्वारा कएल गेल सभ प्रयास विफल भs गेलनि, तखन सभ गंधर्व आ अप्सरा हारि- थाकि कs समीपस्थ भगवान विष्णुक मूर्ति क पूजा अर्चन कय ओतs स वापस स्वर्गलोक प्रस्थान कलथि।
राजाक शरीर आब मात्र अस्थि क ढाँचा नहि गेल छल, तखनो हुनका अपन शरीरक सुधि नहि छलैन्ह। हुनक कठिन तपस्या सँs भगवान विष्णु प्रसन्न भs गेलाह, आ अपन चतुर्भुज विग्रह मँ राजा क समक्ष प्रकट भs गेलाह।
" वत्स! अपन आँखि खोलू, हम अहाँ सs अत्यंत प्रसन्न थिकहुँ" - ई आवाज सुनि अनायास हुनक नेत्र कमल खुजि गेल। गद्गद् वाणी मँ भगवान विष्णु क स्तुति करs लगलाह ओ। भगवान विष्णु कहलखिन्ह -
" हम अहाँक मनोरथ बुझि रहल छी, अहाँ क किछु बाजि कs बतबै क

ञावश्यकना नहि। ञूहाँक मनानथ पूर्ध हायन। ञूहाँ त्रिलाकक ऐश्वर्य प्राप्त कनव। सर दैन्य क जीनs क सामर्थ्य ञूहाँ मँ हायन। ञूहाँ संपूर्ध तूमंडल क ञधिपनि वनव। ञूहाँक जीवन मँ सर किछु ञलग ञाश्चर्यजनक हायन, ञ सामान्य पून्ष मँ नहि रल हनै। ञूहाँक ञर्द्धांगिनी कउा सामान्य नमधी नहि हायन, वनन् ञप्मना मँ (श्रष्ठ ञप्मना ञूहाँक वनध इच्छया कनन" |

रगवान विष्णुक गंरीन वाधी किछु दनी नक गुंजैन नहल। हन कूनक श्री विग्रह सहिन वाधी विलुप्त रय गेल। नाजा पहलहूँ सs वेस वलिष्ठ सौंदर्य वान रव्यनाक प्रनिमूर्नि रs गेलाह।

क्रमश४

ञपन मंनव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ|

२. २. ञ. विपिन कुमान झा- महाकवि रास प्रधीन कर्धरानम् मैथिली ञनुवाद (राग- ३)

महाकवि रास प्रधीन कर्धरानम् मैथिली ञनुवाद

(नृनीय प्रराग)


ञा. विपिन कुमान ञ्ञा

(संस्थापक ञ्ञा सम्पादक- ञाह्नवी संस्कृत ञ्ञी- (ष्माधपत्रिका)

(एहि सँ पुर्व महाकवि रास कन लिखल कर्णरानम् ञ कर्णक मनान्यथा पन लिखल (गल प्राचीनगम एकांकी ञ्ञछि, संस्कृग मँ लिखल एहि ग्रन्थ क ञाहि स्थल विशेष गक ञ्ञध्ययन कयल ञगय महानथी कर्ण ञ्ञपन सानथी सँ निवदन कनैग छथि ञगय ञ्ञर्जुन छथि ञागहि हमन नथ कँ लय वलू एगावग् धनिक मैथिली नुपान्दन पढनं नही ञ्ञहाँ सव ञ्ञाञ्ञी ञाहि सं ञ्ञागु)

कर्ण8 - - ञ्ञहागुखलु,

कर्णः ञ्ञन ! ञ्ञी काना,

ञ्ञन्यान्यशष्नविनिपागनिकृष्गगाग्र-

यौधाश्ववानघनथष् महाहवष् |

कृद्धान्दकप्रगिमविक्रमिधा ममापि

वौधूर्यमापगगि वगसि युद्धकाल || 6||

युद्धस्थल मँ दूनू पञ सँ शस्त्र प्रहान रला पन ञकन द्वाना ञ्ञनं क याद्धा , घाञ, नथ, ञौन हाथी क शनीनक३ खण्ड- खण्ड कय दल ञाञ्ञग ञ्ञछि| ञकन ञ्ञगुलनीय पनाक्रमक गुलना क्राधिग यमनाञक पनाक्रम स कयल ञा सकैग ञ्ञछि एहि गनहँ हमन मन मँ ञ्ञाय युद्धकाल ञ्ञावि (गला पन ञ्ञी

कायनगा कियाक ञावि नहल ञछि?
ञा8 ! कष्टम् |
ञाह ! ञ्ग्यन्ह कष्टक गप्प|
पूर्वं कुन्त्यां समुत्पन्ना नाधय ञ्छगि विश्रुग8 |
युधिष्ठिनादयस्क म यवीयांसस्तु पाण्डवा8 || ७||
प्रथमग8 कुन्ती सँ उत्पन्न ञय हम नाधा क वेटा क नूप मे प्रथिग ञलहुँ| एहि गनहँ युधष्ठिन ञादि पाँचो पाण्डुपुत्र हमन छोट ञाञ्जी हगाह |

ञ्यं स काल8 क्रमलब्धञोभना
गुणप्रकर्षो दिवसाऽयमागग8 |
निनर्थमस्त्नं व मया हि शिञिगं
पुनश्च मागुर्ववनेन वानिग8 || ८||
ञ्जी ञा समय ञ्छ जकन प्रगीञा हम वहग दन सं कय नहल छलहुँ| गुण कन प्रकर्ष कं दखवय वला ञा समय ञाञ् उपस्थिग ञय गल ञछि| किन्तु हमन ञ्स्त्न शिञा एहि समय व्यर्थ सिद्ध ञय नहल ञछि| ञोन की कहू हमन माय सहो मना कन छथि|
ञा मद्रनाज ! श्रूयगां ममास्त्नस्य वृत्तान्त8 |
ह मद्रनाज हमन ञ्स्त्न वृत्तान्त सुनल जाउ|
शल्य8 - - ममाप्यस्ति कौगूहलमनं वृत्तान्तं श्रागुम् |
शल्य- कहू हमना कुगूहलगा ञछि सुनवाक
कर्ण8 - - पूर्वमव वाहं जामदग्न्यस्य सकाशं गगवानस्मि |
कर्ण- पहिने हम जामदग्न्य क निकट गल नही
शल्य8 - - गगस्तग8 |
शल्य- ञाकन वाद|
कर्ण8 - - गग8,
कर्ण: ञाकन वाद
विद्युल्लगाकपिलगुञ्जजटाकलापम्
उद्यग्युनगवलयिनं पनशुं दधानम् |

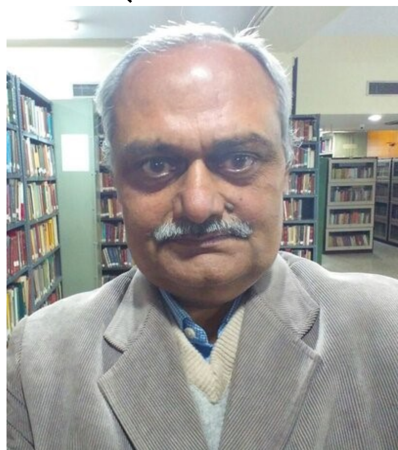
ऊग्राम्कं म्निवनं गृगुवंशकगुं
गन्ना ध्रधम्य निकट निगृग8 ष्ठिगा१म्नि ॥ ९॥
विजली क लगा क समान जिनक जटा छिजियायल छल, उदीयमान सूर्य क ज्ञाग स घनालय म्निश्रेष्ठ गृगुवंशश्रेष्ठ्जाक समान ऊग्रिय के नाश कनिह्ान पनशुनाम के निकट जा कइ ध्रधाम कय चूपचाप ठाढ़ ग्य ग्लहूं|
शल्य8 - - ततम्नत8 |
शल्य- ऊकन वाद
कर्ध8 - - ततम्न जामदग्न्यन ममाशीर्ववनं दन्वा पृष्ठ१म्नि,
का ग्वान् किमर्थमिहागन झूगि |
कर्ध- ऊकन वाद पनशुनाम हमना ज्ञाशीर्वाद दय पूछलथि के छियइ कियाक ज्ञयलहु एतय?
शल्य8 - - ततम्नत8 |
शल्य- ऊकन वाद
कर्ध8 - - ग्गवन् ! ज्ञखिलान्यम्नाधूपशिजिगुमिह्ामीग्यूक्तवानम्नि |
कर्ध- गुन्वन! समम्न शिज्ञाग्रहध कनवाक हेतु ज्ञायल छी ज्ञी कहि चूप ग्य ग्लहूं|
शल्य8 - - ततम्नत8 |
शल्य- ऊकन वाद
कर्ध8 - - तत उक्ता१हं ग्गवता, ब्राह्मधेषूपदशं कनिष्यामि,
न ऊग्रियाधामिगि |
कर्ध- ऊ कहलथि हम ब्राह्मधे टा क शिज्ञा देत छी ऊग्रिय के नैं
शल्य8 - - ज्ञम्नि खल् ग्गवत8 ऊग्रियवंैश्य8 पूर्ववैनम् | ततम्नत8 |
शल्य- हां ऋषि के ऊग्रिय संग पहिने सं शत्रुता छन्हि|

कर्ध8 - - तता नाहं ऊग्रिय झ्न्यम्न्नापदशं ग्रहीतुमानधं8 |
कर्ध- हम नहि ज्ञी कहि शिज्ञा प्रानम्न कयल|
शल्य8 - - ततम्नत8 |
शल्य- ऊकन वाद

निनन्दन. . .

ऊे नवनायन ऊुपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.comपन पठाउ|

२. ३. नवीन्द्र नानायध मिश्र- मागृगूमि (उपन्यास) - १२म खप


नवीन्द्र नानायध मिश्र

मागृगूमि (उपन्यास) - १२म खप

१२

"ऊाचार्य! ल(ोगग ऊुछि हमसर' लखनपुनक सीमाम प्रवश कउ नहल छी |"

"स ऊुहाँ कना वुसि नहल छी?"

"कहु, ऊुहा काना कहवाक गप्य ए'लैक? ऊाहि मारि- पानिम ऊन्म ललहुँ, ऊगउ ननाम दाम्हसर'क संग खललहुँ, ऊकन पाखनिम ऊुड़शीगल दिन कउ मारि- पानि- कादासँ ऊुड़ाङ्ग नहलहुँ गाहि गामकँ काना नहि चिह्नवैक ? वायुमण्डलम ऊामक मडानक सुगंध पसनि नहल ऊुछि | निश्चय हमसर' (गापी ऊामक गाछक लगीचम ठाढ़ छी|"

"ऊहुँक ऊवाव नहि ऊुछि | ऊुपन ऊन्मगूमिक मारि- पानिसँ ऊहाँक सिनह प्रशंसनीय ऊुछि |"

ऊयन्दकँ मान पड़ैग छलनि ननाक समय| कगक निश्चल हाङ्ग ऊुछि ननाक मान | कना कगका दिन शीला दुनका ऊुपना संग ऊुपन घन लन ऊाङ्ग

छलनि | कतेको कालधरि ओ सभ गोटेसँ खेलाइत रहैत छलाह | कैक दिन जखन पाठशालामे भोजनक कोना ओरिआओन नहि होइक तँ ओ अपन पिताक मारफत सभ किछु पठओने बिना नहि मानैत छलि | कतेको वर्ष ओकरा मना कएल गेलैक जे ई पाठशालाक नियमक विरुद्ध थिक| मुदा ओकरा लेल धरिसन | समयक संगे हुनका लोकनिक आपसी सिनेह गहींर होइत गेल | आइ कतेको वर्षक बाद जखन ओ अपन गामक सीमानपर पहुँचलाह अछि तँ सभसँ पहिने हुनका शीला मोन पड़ि रहल छनि |

" आचार्य! जँ अपने अन्यथा नहि ली तँ एकटा गप्प कही|"

" अवश्य कहू | मोनक बात हमरा नहि कहब तँ कहबै ककरा | एही लेल तँ हम अहाँक संगे एतए धरि अएलहुँ|"

" एहि कलमसँ सटल शीलाक घर छैक | की ओकरासँ भेँट भए सकैत अछि? "

" के शीला? "

" हमर नेनाक संगी | हमसभ संगे- संग खेल धेने रही |

" हम प्रयास करैत छी | ताबत एहि गाछक छाहरिमे विश्राम कएल जाए |"

गोपी आमक गाछक छाहरिमे जयन्त आ हुनकर संगे आएल शिष्यलोकनि सुस्ताइत छलाह | आचार्य एकटा शिष्यक संगे शीलाक पता लगेबाक हेतु आगू बढ़लाह |

शीलाक पिता इलाकाक मानल वैद छलाह | हुनकर घरक स्थिति सम्पन्न छल | वैदजीक एकमात्र संतान शीला छलखिन | मातृहीन संतानक माता-पिता दुनूक काज ओएह कए रहल छलाह| ओ क्रमश: बढ़ैत गेलीह | आब हुनकर विआह करबाक वएस भए गेल छलनि| वैदजी बहुत मनओलखिन | मुदा शीला नहि मानथि | वैदजीकेँ किछु समाधान नहि भेटलनि तँ ओहो चुप भए गेलाह | कइए की सकैत छलाह? एकमात्र संतानक मोहक आगू लोक-लाज पाछू छुटि गेल | " जकरा जे कहबाक छैक से कहओ, हम अपन संतानक जान तँ नहि लए सकैत छी? " - ओ मोन- मोन सोचथि| हुनका ई बात बुझल रहनि जे शीलाक जयन्तक संग दोस्ती छैक | मुदा से एतेक अंतरंग अछि तकर अंदाज हुनका कोना होइतनि ? " ई बात सभ तँ सोचल- तोपल

नहऽ सउह नीक|" - स उा सावथि | गँ एकन वर्वा कगकू नहि कनथि | कूनका मानम ह्नानि ऊ समयक संग शीला ब्रयं एकना विसनि ऊगीह आ गखन कूनकन विआह सूयाश्च वनक संग कएल जाएग | मूदा स समय कहिउा नहि आएल | शीला गुम्म नहि गेलीह |

आङ्क एगक दिनक वाद गामक सीमानपन अविगहि ऊयन्दकँ सरसँ पहिनि उाकन ध्यान अएलनि | आवार्यऊी कूनकन वाग मानि गामम शीलाक पूछानी कनवाक हगु आगू रल नहथि कि एकटा वृब्रकँ दखि पूछैग छथि-

" की अपन शीलाकँ ऊनैग छिअनि?"

" अपन क छी आ शीलासँ अपनकँ की प्रयाऊन अछि?"

" मान्यवन! हम छी ऊानकीधामक शानदाकूंऊक आवार्य | अपन प्रिय शिष्य ऊयन्दक शिउा संपन्न रए गेलाक वाद कूनका संग कूनका अनिअवैग एहिठाम धनि आवि गेलहूँ |"

" ङ्ली गँ वहूग नीक वाग रल | आवार्यक अपन शिष्यक प्रगि एहन सिनह गकनसँ रटग |"

" वाग स नहि अछि | असलम कूनका संग एकटा दूर्घटना रए गेलनि ऊाहि कानधसँ हमना कूनका संग एहि गाम धनि आवए पड़ल|"

" हमना वहूग विंगा रए नहल अछि | सरटा वाग रुनिछा कए कहू| "

आवार्यऊी कूनका सरटा वाग कहलखिन | ङ्लहा कहलखिन ऊ गामक सीमानम अविगहि ऊयन्द सरसँ पहिनि शीलाक वर्व कलनि अछि आ उा कूनकासँ रँट कनवाक हगु वहूग व्यग्र छथि | स वाग सूनि उा वऊैग छथि-

" हम छी शीलाक पिगा मधूकान्द | हम वैदक काऊ कनैग छी | गामम एहि कलमसँ सटल हमन ऊौषधालय अछि |"

" गखन गँ हम वहूग सही ऊगहपन पहूँवि गेल छी |"

" मूदा शीलासँ रँट गँ अखन संरव नहि अछि|"

" स की?"

" ङ्ली एकटा दूखद वृगांग अछि | कखनहूँ वैनसँ वगिआएव | पहिनि अपन ऊयन्दकँ आश्वस्द कनू | अपनासरं वहूग थाकि गेल छी| थाड़काल विश्राम कए लिअ | रुन गप्प- सप्प हगैक |"

" जयन्त हमर प्रतीक्षा कऽ रहल हेताह|"

" कोनो बात नहि, हमहू ओतहि चलैत छी | सभगोटे संगे आइ हमर ओहिठाम चलू |"

आचार्य वेद मधुकान्त संगे गोपी आमक गाछतर सुस्ताइत जयन्त लग पहुँचलाह |

" हम छी वेद मधुकान्त|"

" ओ! प्रणाम करैत छी | शीलाक समाचार कहू | ओ नीक छथि ने? "

वेद मधुकान्त गुम्म पड़ि गेलाह | हुनकर गुम्मीसँ जयन्त बहुत चिंतित बुझाइत छलाह |

" अहाँसभ हमर ओहिठाम चलू | ओतऽ आरामसँ गप्प- सप्प होएत|"

" जाबत हम शीलाक समाचार नहि सुनि लेब ताबत कतहु नहि जाएब|" - जयन्त बजलाह |

आचार्यजीकेँ ई बहुत आश्चर्य लागनि जे गाम अएलाक बाद ओ अपन माता- पिता वा कोनो श्रेष्ठ लोकनिक चर्चा नहि कऽ शीलाक पाछू पड़ि गेल छथि | तखन हुनका नहि रहल गेलनि तँ पुछिए लेलखिन-

" हमरा हिसाबे सभसँ पहिने अपन घर चलू | ओतए अपनेक परिवारक लोक प्रतीक्षा कऽ रहल हेताह |"

" ततेक भाग्यवान हम नहि छी आचार्यवर! हमर माता- पिता बहुत पहिने हमरा छोड़ि गेलाह | सुनैत छी जे मृत्युसँ किछुदिन पूर्व हमर पिता बाजल रहथि -

" ई बालक परम यशस्वी ओ प्रकाण्ड विद्वान होएताह |" से कहि ओ एहि नश्वर शरीरकेँ त्याग कऽ देलथि| हुनकर आकस्मिक मृत्युसँ हमर माए बहुत दुखी भेलीह | ओ अन्न- जल त्यागि देलीह आ कतबो केओ मनओलक नहि मानलीह | तीनमास धरि बिना अन्न- जलकेँ रहलीह | ई बात इलाकामे पसरि गेल | लोकक करमान लागि गेल | सभ एतबे कहए-

" एहि समयमे एहन लोक भेटब मोसकिल |"

कतबो केओ आग्रह कएलक ओ टस सँ मस नहि भेलीह आ कार्तिक शुक्ल त्रयोदशीक प्राण त्यागि देलीह| एहि तरहेँ थोड़बे दिनक भीतर हम अपन

माता- पिताक छत्र- छायासँ दूर भऽ गेल नहि | "
" ई तँ बड़ अनर्थ भेल |" - आचार्यजी बजलाह |
जयन्तक आँखि नोरसँ भरि गेल | ओ किछु बजबाक स्थितिमे नहि रहथि |
" जखन ई हाल छल तँ गाम की करए अएलहुँ? ओतहि रहि आश्रममे छलहुँ | कालीकान्त स ओतेक आग्रह कएलाह| ओतहि रहि अपन अध्ययन- अध्यापनक काजमे लागल रहितहुँ|" - आचार्यजी पुछलखिन |
तनकर बात सुनि कऽ जयन्तक छाती फाटि गेलनि | ओ ठोह पाड़ि कऽ कानए लगलाह | आचार्यजी बड़ असमंजसमे पड़ि गेलाह | अश्रुस्राव स्रवए लगलनि जे बेकार ओहि बातसभक चर्चा कएलहुँ | " जयन्त स्वयं विद्वान छथि| अपन नीक- बेजाएक बारेमे सोचि सकैत छथि | मुदा आब की कएल जाए? " - ओ सोचथि |
वैद मधुकान्त एतेक कालधरि चुपचाप सभटा देखैत- सुनैत रहथि| तनका आओर नहि रहल भेलनि |
" अहाँ हमरा ओहिठाम चलू | ओतहि अहाँक सेवा होएत|"
" हम कतहु नहि जाएब | हमरा साथ पाठशालापर लए चलू | ओतहि हमरा शांति भेटत |"
" ठीक छैक | हमसभ ओतहि चली|" - आचार्यजी बजलाह |
जयन्त पाठशाला लग पहुँचितहि माटिपर दण्डवत भऽ प्रणाम करए लगलाह | अपन पूर्वजक एहि कृतिक जीर्णोद्धार करबाक हेतु ओ कहिआसँ सोचि रहल छलाह | जानकीधाममे शारदाकुंजमे विद्या ग्रहण करैत दिन- राति ओ एतब चिंतामे लागल रहैत छलाह | जयन्तक कतेको पुरुख एहीठाम विद्यादान करैत जीवन बिताओने रहथि| संयोग एहन भेल जे जयन्तक पिताक देहांतक बाद पाठशालाक गतिविधिमे विराम लागि गेल | जयन्त ओहि समय नेन रहथि | तँ किछु नहि कऽ सकलाह | पाठशाला किछु शिष्यसभ यथासाध्य प्रयास कएल कलनि | मुदा ओ चलल नहि| अंततोगत्वा, पाठशाला बंद भऽ गेल | विद्यार्थी लोकनि यत्र- तत्र चलि गेलाह | आइ सालोँ बाद ओहिठाम जयन्त अपन आचार्यक संग आएल छथि सेहो करुण स्थितिमे | आँखि सारु मूनल छनि | चारूकात अन्हार- अन्हार पसरल बुझाइत छनि | मुदा तहिसँ

की? हुनकर अंतर्मनक ज्योति बहुत प्रखर अछि | हुनका एहिठाम आबि बहुत गौरवक बोध भ' रहल छलनि|

" आचार्यजी क्षमा करब | हम तँ अपनेकेँ बहुत कष्ट दए देलहुँ | अपनेक स्वागत की करब उल्टे अहीं हमर सेवा करए लागल छी |"

" एहि हेतु अहाँ चिंता नहि करू | वैदजी कहैत छथि जे अहाँक आँखिक ज्योति वापस भ' सकैत अछि| हमरा विचारसँ सभसँ पहिने एकर प्रयास कएल जाए | शेष काज होइत रहत |"

जयन्त किछु नहि बाजि सकलाह |

" सही कहि रहल छथि आचार्यजी | हम मास दिनक भीतर अहाँक नेत्रक ज्योति आनि कए रहब |" - वैद मधुकान्त बजलाह |

जयन्त चुप नहि मौन स्वीकृति देलखिन | दोसरदिन भोरसँ वैदजी हुनकर इलाज प्रारंभ कलनि |

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ|

२. ४. प्रेमशंकर झा " पवन" - लोक आस्थाक केन्द्र नवादा केँ माँ हयहट्ट देवी भगवती स्थान


प्रेमशंकर झा " पवन"

लोक आस्थाक केंद्र नवादा के माँ हृदयहट्ट देवी भगवती स्थान

मिथिलाँचल के अनेक पवित्र स्थान म सँ एक नवादा के माँ हृदयहट्ट देवी भगवती स्थान, ओ एकटा प्रसिद्ध शक्तिपीठ क रूप म जानल जाइत अछि | नवादा भगवती स्थान दरभंगा जिलाकँ बेनीपुर प्रखंड सँ लगभग पाँच किलोमीटर उत्तर- पश्चिम म नवादा गाँव म अवस्थित अछि| माँ हृदयहट्ट देवी दुर्गा स्थान 52 सिद्ध पीठ म शामिल एकटा आस्था कँ केंद्र अछि| एहि दुर्गा स्थान सँ जुड़ल अनेक मान्यता अछि जाहिमे सँ एक अछि, शिव प्रिय सती सँ जुड़ल मान्यता| एहि शक्तिपीठ कँ वर्णन देवी भागवत पुराण आ मत्स्य पुराण म सेहो भेटैत अछि | जाहिमे वर्णन अछि ओ सती कँ वाम स्कन्ध एतहि खसल छलनि| कहल जाइत अछि ओ जखन सती पिताकँ व्यवहार सँ क्षुब्ध भए गेलीह आ पिताक द्वारा आकृत यज्ञक हवन कुंड म अपन आहुति दए देलनि| तखन महादेव सतीक अधजरू शव कँ कान्ह पर लए अर्द्ध- विक्षिप्तावस्था म दौड़लाह ओहि काल भगवतीक वामा कान नवादाक अहि स्थान पर खसल, तैं आइ दुर्गाजीक भव्य मंदिर अछि| जकर प्रमाण अखनो भेटैत अछि ओ सिंहासनक विद्यमान रूप कानक आकारकँ अछि|

एहन मान्यता अछि जे लगभग 600 वर्ष पहिने राजा हयहट्ट कँ द्वारा एतय जगदम्बाक मूर्ति स्थापित भेल छलनि| मुदा आब दुर्गा देविक ओ मूर्ति एतय नहि अछि. कारण बहेरी प्रखंडक हावीडीह गामक एकटा साधक प्रति दिन साधना- आराधना लेल एहिठाम अबैत छलाह| बाद मे जखन ओ वृद्ध भऽ गेलाह आ एतय आयबा मे सेहो असमर्थ होमय लगलाह त' एक दिन स्वप्न देखलखिन जे माँ जगदम्बा स्वंय हुनका कहैत छथिन जे आब तोहर अवस्था एतेक बलि एहिठाम आबयवाला नहि छौक आ दुर्बल कायाक कारण शरीर सेहो एहि लायक नहि छौ ताहि तारा आब एतय अएबाक जरूरत नहि तौं आब घरहिं सँ हमर पूजा आराधना करह मुदा साधक एहि बात कँ मानक लेल तैयार नहि भेलखिन जे बिना मैया कँ मूर्त रूपकँ पूजा अर्चना करत ओ रहताह| कहाबत छै भक्त कँ आगू भगवान सेहो झुकि जाइत छथिन. तखन मैया कहलखिन जे आब तारा अयबाक जरूरत नहि. तौं हमरा अपना संग लेने चलह. भक्त भगवतीक प्ररणा सँ सिंघासन सँ मूर्ति उठाकए हावीडीह लए गेलाह, जतय अखनो ओहि मूर्तिक पूजा कयल जाइत अछि| ओहि ठाम सँ उठायल गेल भगवती कँ प्रतिमा आ अन्य सब वस्तु गुप्तकालीन अछि| अहि सिद्धिपीठ मे मात्र सिंघासन शेष रही गेल अछि जिनकर पूजा वर्तमान मे होइत अछि| एहि मंदिर मे जगदम्बाक निराकार रूपक पूजा होइत अछि| तेरहम शताब्दी मे एहि मंदिर कँ बहुत प्रसिद्धि छल, जाहिसँ नवादा दुर्गा स्थानक प्राचीनताक आकलन कयल जा सकैत अछि|

कोना पहुँचब नवादा भगवती स्थान

नवादा भगवती स्थान दरभंगा जिलाकँ बेनीपुर प्रखंड सँ मात्र लगभग पाँच किलोमीटर उत्तर- पश्चिम मे नवादा गाम मे प्राचीन काल सँ अवस्थित छनि| बेनीपुर प्रखंड सँ सीधे सड़क नवादा दुगा स्थान तक गेल अछि एहि ठाम सँ आटो पकरू आ पहुँच जाउ नवादा भगवती स्थान| दरभंगा सँ सेहो सीधे कैब बुक कए एहिठाम जा सकैत छी|

नवादा भगवती स्थान कँ धार्मिक आ ऐतिहासिक महत्व

ओना त' एहि दुर्गा मंदिरक प्राँगण मे बारहो मास पूजाक लेल आस्थावान लोकक भीड़ लागल रहैत अछि, मुदा शारदीय नवरात्र मे एहिठाम भक्त

दुन दुन सँ ऋवैग छथि ऋा मैया कँ पूजा ऋर्वना कनैग छथि| संगहि मैया क दनवान म जनूनग क हिसाव सँ मनाकामना कनैग छथि | एहन मान्यगा ऋछि ऊ एहिठाम कयल मनाकामना ऋवश्य पूना हाङ्ग ऋछि| मनाकामना पूना ऐलाक वाद ऐक्ष पूनः एहिठाम ऋावि मनौगी कनैग छथि | जाहि कानध साला ऐनि ऐक्षाक ऋावा जाही लागा ल नहैग ऋछि मूदा नवनाग्रा म विशाल मला ल ैगग ऋछि ऋा सांस्कृगिक कार्यकर्म सहा हाङ्ग ऋछि| नवनाग्रा कँ दश्मा दिनक वागवनध एहिठाम वड़ नमनगन ऐ' जाङ्ग ऋछि| नवादा ऐगवगी स्थान कँ ऐगिहासिक महत्व कँ ऋंदाज एहि वाग सँ लगायल जा सकैग ऋछि ऊ नाजा हयहष कँ द्वाना एहि मन्दिन म मूर्गिक स्थापना ऐल छलनि जाहि कानध मैया कँ नाम हयहष दवी पनलनि एहि शक्तिपीठ कँ वर्धन दवी ऐगवग पूनाध ऋा मत्स्य पूनाध म सहा ऐटैग ऋछि जाहि कानध सँ एहि स्थान क ऐगिहासिक महत्व वढ़ि जाङ्ग ऋछि। लाक ऋास्थाक कँन्र वनल एहि स्थान कँ पर्यटक कँ मान्यगा ऐटवाक लल सहा प्रयास ऐए नहल ऋछि| मूदा एहिम कगक समय लागग गकन काना ठीक नहि, कानध नाज्या सनकान एहि ऊप्रक विकास कँ लल ऊगक सक्रीय नहि छथि जगक हवाक वाही|

- प्रमशंकन झा " पवन" संगम विहान, दिल्ली

ऋपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ|

२. ७. रोशन जनकपुरी- कथानक


रोशन जनकपुरी

कथानक

" एकटा कथानक चाही मित्र ! नियलिखिक |"
" कथा किया नञि ? हमरे स किया ? आ नियलिखिक किया ?"
" मोन किछु अलग हटि क' छैक | कथानकमे किछु अपना हिसाब हिनहिनक गुञ्जाइस नहिँछै | कथामे ओ सुविधा नञि होइछै | आ सब स बेसी अहाँ सन नियलिखिक लेखकसब सम्हमे पडैत जाइछै |"
" मुदा कहब त हम अपने बात ! "
" हँ |"

" गहन ठीक छै | एकटा प्लौट मनम गैयान जूछ, सुनाउ ? "

" हगे |"

" ठीक छै | मुदा ऐधर्य नाखव, वीचम टाकटाक नछूँ कनव . . . . "

. . . .

जूक्षान नाछूग, उछूनियाँक वटा कदम गन मनल पनल छै |

नीक लाक ' वढ़म' गन विवा नहल छै उछूनिया वटाक |

. . . .

एयावह वियानल जूाँछूख, गुँह मुग जूा कनिखाम लएनायल, टपटप, टपकैंग लाल लाल लहू स ललाछूग धनगी, जूा ललायल उछूनियाँक मछूल माल हाटल नुजूाँ, जूा उाकना वानूकाग मनसायल हाँकल रीतृक ठहक्रौग वर्वन मूहठानसव, जूा खिड़की स मूहियानी दैग नीक लाकक गम्रीन छपल जूछूछ जूखवानम | नीक लाकसव पढ़ैग जूछूछ जूखवान | मूहूँ विवक' वैग जूछूछ- " एक्कछूसम शगाद्यीम सहा एना ? "

. . . .

नीक लाक नवका, वकवक कपड़ा पहिनैग जूछूछ | जाछूग जूछूछ ' वढ़म' गन | मौन वढ़वैग जूछूछ | श्रद्धा स नगू हाछूग जूछूछ - " नब्बा कनू ह वढ़म ! दूश्राग्मा, गुग प्रग, पिशाव पिशाविनी, जाछून जागिन स नब्बा कनू ह जगदम्बा ! ह काली ! संहान कनू उाहि सव दूष्ट प्रवृग्तिक ! "

धूप गुग्गुल स धूजूाँछूग जूादूगक धूजूाँ हाथम एनैग वालवब्वाक माथ हँसागैथ जूछूछ नीक लाक |

वढ़म थानक गहवन स वहनाछूग धामी छूवैग जूछूछ नीक लाकक माथ | सिनूनक लाल टीका वा छाउनक कानी टीका लगवैग जूछूछ सवहक गालपन | पढ़ैग जूछूछ शुएमन्चु मन्त्न | कामनाम गाहाछून कनैग जूछूछ - " जाकिनी पिशाविनीक नाश हा ! " जयजयकान स गुंजायमान ए' जाछूग जूछूछ वढ़मथानक उग्मव |

. . . .

घैलम जूसंख्य गुँड़ छै | गुँड़सवम स जूसंख्य छूजागक कमजान टिमटिम वहना नहल जूछूछ | घैलक उग्पनक ढकनाम क धधनाक छूजाग उग्पनै

हवाम हना नहल ञ्ऌछ | पिलपिल ञ्ञागम घना वनौन, तञ्ञनियाँसन मुँहकान वालीसव, विद्गाञ्ञग नञ्ञँ ञ्ऌछ, वस रीतृसन दखाञ्ञग ञ्ऌछ, नाँञ्ञव नहल ञ्ऌछ | गाञ्ञव नहल ञ्ऌछ - "ह ञ्ञान नाञ्ञग मिमिया | नीकलाक नाक स्रकनौग ञ्ऌछ - "ञ्ऌछ ग ञ्ञी हमन सँस्कृति, मृदा पृनान ञ्ऌछ | मजा नञ्ञँ ञ्ञाञ्ञव नहल ञ्ऌछ |"
वढ़मथानक धर्मध्वज पन टाँगल माञ्ञक स गुँजौग ञ्ऌछ ध्रुजन संगीग - ' वल वल गा तञ्ञनियाँ कदम गन, गाना वटाक खयवौ वढ़म गन |'

. . . .

नीक लाक माञ्ञग गल ञ्ऌछ | की वार्ड ञ्ञा ञमसटक वसक धकधक छागीक काँढ़ काँढ़ छिटका नहल ञ्ऌछ | मग नीक लाकसव, विजलीजका नाँञ्ञव नहल ञ्ऌछ | वढ़मथानक छग पन स छिड़ियाञ्ञग ञ्ञत लाञ्ञटक ञ्ञागक वाञ्ञढ़म वहि नहल ञ्ञ नीकलाकक मन, उद्दाम | वान् दिस जयजयकान फृढकान ञ्ऌछ - ' वल वल गा तञ्ञनियाँ कदम गन, गाना वटाक खयवौ वढ़म गन |'

. . . .

नाञ्ञग मृदा ञ्ञानिए ञ्ऌछ | तञ्ञनियाँक गामम ग ञ्ञाउान घन ञ्ञान | श्गाविया पृनान, जर्जन मिमियाक मनल ञ्ञाग, माथपन लदन नाँञ्ञव नहल तञ्ञनिएसन लाकसवहक जीवनक ञ्ञान स नञ्ञँ जीग सकल ञ्ऌछ | कगवा जा गावजा - ' गाहन रगास वढ़म वावा मिमिया वनौलिया ह्म |'
सववन तञ्ञनिएँक वटा मनौग ञ्ऌछ | सववन तञ्ञनिएक मूँह नाक स रगकौग ञ्ऌछ लद्ध | ञ्ञवन ञ्ञह रगल ञ्ऌछ |
सववन जका ञ्ञवन नीक लाक नञ्ञँ, उाकन ञ्ञपना लाकसव रगाव' वाहैग ञ्ऌछ उाकना गाम स - ' ञ्ञी गाम स राञ्ञग किए नञ्ञँ जाञ्ञछै ! ' उाकन ञ्ञपन लाक, जकना तन छै ज तञ्ञनियाँक वहन्न उाकना वटा नञ्ञँ मञ्ञन जाय | नीक लाकक कहीँ उाकनासवम तञ्ञनियाँ नञ्ञँ दखा जाय |. . . . "
" मृदा तञ्ञनियाँक वटा किया मनल ? वाह तञ्ञनियाँ, तञ्ञनियाँ किए रगल ?"
" ञ्ञखिन धैर्य टूटिए गल ! एकन जवाव ञ्ञनक र' सकौग ञ्ऌछ |

तङ्गनियाँ महिला ञ्ङ्गछ, वाह तङ्गनियाँ छाट ञाङ्गप . . . . . "
" छाट ञाङ्गप ?"
" एह ! एना वञेछी, ञना ञ्हाँ ङ्गङ्गलेंन्तु स ञ्ायल हाङ्ग | हँ छाट ञाङ्गप !
नीक लाकसव महनप कनेवला सवक छाट ञाङ्गप कहेछे |"
" महनप प हमङ्कँ कनेछी |"
" मुदा ञ्हाँ गुँह प नङ्गँ उOवे छी न महादय ! ञ्हाँ म' न प नङ्गँ न उOवे
छी महादय ! ञ्हाँ विद्वन प नङ्गँ न उखाने छी, ञ्हाँ ञप्मा प नङ्गँ न सीवे
छी, ञ्हाँक किछु न्पैया वा किछु सन ञ्ननक खापिन ञ्ानक नाङ्गप नङ्गीन
कनवाव' लेल विवश प नङ्गँ न कयल ञाङ्गय . . . . . !"
" एल ! एल ! ञ्ागु वढ्ढ ! "
" . . . प तङ्गनियाँ गनीवा ए' सकेय | तङ्गनियाँ विदशियाक ञ्सगन्ञ्ा
व' कृ सहा ए' सकेय , वा तङ्गनिया नीक लाककलल ञ्टनी सहा ए' सकेय
|"
" पव ?"
" पव की ! ञ्ङ्गान नाङ्गप, तङ्गनियाँक वटा मनल पनल छे | नीक लाक
वढ़म पन तङ्गनियाँक वटाक विवा नहल छे |"
" ञह ! वङ्ग कनु ङ्गी पुनना नाग | हमन माथ हाङ्गट ञायप |"
" वस ! एपवम टँ वाङ्गञ (गलङ्कँ ? ञ युग युग स ङ्गी एाङ्गग नहल ञ्ङ्ग,
ञाकन की हाल हाङ्गप हगे ? . . . . . कथानक नङ्गँ वाही ? नियलिखिक
?"
" ञह ! ञ प वाहव कनी | मुदा कनेक दम्म प धन' दिय ! ञह कपे
एयानक ! . . . . ञ्ाव कङ्क ! "
" प, ञ्ङ्गान नाङ्गप . . . "
" हन ञह ?"
" हँ, कपो स वाप प ञ्ागु वढ़ावही पनपे न ! "
" हँ, हाउ ! "
" ठीक छे | मुदा टाकु नङ्गँ वीवम | ध्यान एटेक ञाङ्गछे | . . . . . ,
तङ्गनियाँक वटा मनल पनल छे | गुँह, मुँप ञ्ा कनिखा स लएनायल ञ्ा

माथ स यॅन गक यूगीन यागनाक समाधि वनल ञूछ्छ ओ | ओ मनमे ञूछ्छ दूनियाँक सनाध सरुञन ञूछ्छ ञा ओकन ञाँछ्छखमे एकटा ञाक्राशित प्रश्न प्रओपित ञूछ्छछ | एकटा यूगक प्रश्न ! - नीक लोक किया विवा ग्गल ओकन वटाक ? कहिया ञून्क हायग छ्छी नीक लोकक दूनियाँ ? कहिया वनग छ्छी दूनियाँ नीक, सवरुकलल ?"

समयक रागलपन एकटा गक्की टाँगल ञूछ्छ - एकछ्छसम् शगाद्दि ! ञा ओछ्छ गक्कीमे लटॅक नरुल ञूछ्छ ठछ्छनियाँ ञा ओकन वटा , पन्नूलमे ञका मूलॅग |

. . . .

ञूखवानक मूँहपन एकदिस ठछ्छनियाँक लक्कू स लथपथ दृश्य ञूछ्छछ, ग दासन दिस उग्नवमे मागल ञयञयकान कनॅग नीक लोकक दृश्य छपल ञूछ्छछ | शिर्षक ञूछ्छछ - ' गाह्न रग्नास वढ़मे वावा | . . . . . . '

. . . .

" ओह ! ओह ! वद्द कन् ! छ्छी कथानक ! "

" हँ, ञूछ्छ स वसी कहल की ञा सकॅय ? ञूछ्छ स ञागू ग किछ् कनवाक ञन्नी हाछ्छछॅ |"

" की कनवाक ञन्नी छॅ ?"

" ञूछ्छ सड़ल, मागल नीक लोकक दूनियाँक ध्वंस ञा सवरुकलल नीक दूनियाँक निर्माध |"

" ओह ! कग रयानक ! एह्न कथानक वञानमे वलगॅ ?"

" छ्छी ग ञूहाँ ञानी | हमना ग कथानक सूनयवाक छल, स सूना दलकूँ |"

" एना किया वओछी ? ञाव ञूकूँ हमना ञूपनिविगसन वूसा नरुल छी | एगक पीड़ा, एगक ञाक्राश ञूहाँ कथानकमे काना रग्नलकूँ ? ञाश्चर्य ञूछ्छछ ! "

" ठीक कहलकूँ ! हमकूँ ओही यूगीन यागनाक एकटा हिम्सा छी | हमकूँ एकटा ठछ्छनियाँक वटा छी, ञकन माय ञूपन वटाक ववाव' मे ञूपन ञान द' दलक |"

" ओह ! "

ञ्पन मंगब्य editorial.staff.videha@gmail.com
पन पठाउ।

२. ६. गुवनश्वन वौनसिया "गुनश"- दु टा वीहनि कथा



गुवनश्वन वौनसिया "गुनश"

दु टा वीहनि कथा

१

खानापुर्गि

घुड़न ककञ्ञाक पाना प ंठग छल टाकैंग पूछलखिन वौञ्ञा ञ ञ्ञ खानापुर्गि कखानापुर्ग ककना वाजल जायग छल?
वौञ्ञा समसावैग दखियौ वावा खानापुर्गि वह ञ्छि जखन पग्वा खायक लेल वैञ्ञ्सैं छथिन ञ्ञा पहिल पनसन कन वाद जखन दाञ्ञ्ल गनकानी ञ्ञा नाटी राग मां स मं ंगय छथिन गकन वाजल जायग छल खानापुर्गि।

कक्आ अ्प्यन ऊवि टटालेँग दू टाका निकाललखिन आ देँग वाऊलखिन ऊाऊ ललटूनमा दाकान सँ दू टा वोँकलेट लइ लव आ एकटा अ्हाँ खायव आ एकटा हमना दव|
वोँआ विंदूक पाड़ेँग हमन ऊवाव नीक छल|

२
दह वाह्नल हाथ वाहन

एकटा पूनूष कन वावूऊी गुऊँन ग्लाह|
उ कनेँग नहथिन हा वावू हा वावू गाना विना काना नहवोँ|
क्रिया कर्म कन समान एकत्रिग कयल ग्ल|
ववान वनल आ लास क सूगायल ग्ल|
पंऊी ऊी पूछलाह अ्हाॅॅंक वावूऊी कन काना एहन छ्न्हा ऊ नहिँ पून रल हेँग सह वाऊू|
उ आदमी वाऊल हह हमन वावूऊी सिकंदन महान कन वड़का रक्न नहथिन आ कहिया काल वऊँग नहथिन ऊ हम मनव गइ हमन विदाऊ्ी सिकंदन महान ऊकाँ कनव हमन हाथ वाहन कइ दव|
पंऊी ऊी गइ वस की दह वाह्नल नहऊ् दियौ आ हाथ वाहन कइ दियौ|
अ्पन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ|

२. १. कुमान मनाऊ कश्यप- २ टा लघुकथा


कुमार मनोज कश्यप

२ टा लघुकथा

१

जेल यानि, गेल यानि

आइ ए कमीशन क रिजल्ट वँटलै। लोक निराश त' छलैहे अ आशानुरुप ए कमीशन अपन रिपोर्ट नहिं देलकै आ सरकारो आश पर पानिये ढ़ारलकै; मुदा अपन कोन वश! जेहे हाथ सैह साथ! एकमुश्त तीस हजार पावि क' अ रामांविल त' नेहाल छल। अव क देन तजवीज क' क' देखलक..... जँव वूझा नेहाल छै अपन स' | वस मे पिकटमारी उहिना वसी! विवाहलक घर अवा काल पैघ लिफाफ मे राखि क' दू- तीन रस्सा माड़ि क' कसिया क' हाथ मे पकड़ने नेहा। आइ अ रामांविल छल! लगैत अ कखन समय हाइ आ अ घर पहुँवि क' कनियाँ क लिफाफ थम्हावै। दरमाहा क त' सर' पाइ उधारी वूकता करै मे खतम लागिया मे पड़ल पानिक वून्न जकाँ अघ मे निपत्ता र' जाइत छै..... देन उधारीक दुश्चक्र उहिना मास- दर- मास, साल- दर- साल वलैत नहैत छै। आइ इ अगिनिक्का पाइ पावि अ कतेक खुश हरतै! अपन कोना सख- मनोरथ त' ववारी सावव न करैत छै कहिया!

अ वस पैंठ स' सटकानने घर पहुँवल। कवाड़ खालितै कनियाँ क लिफाफ थम्हा देलकै एकटा गहींर पैघ मुस्कान संग।

- ' कि छियै?'

- ' खालि क' देखियौ तखन न वूझवै! '

- ' कि देखियौ आखन मकान मालिक कहि क' गेलै अ एक साल क किराया अगाउ दवै लै, नहिं त' मकान खाली क' दवै लै....... वाप क हार्ट क आपरेशन करतै। एम्हर वौआ क ट्युशन स पढ़ाइ जनुनी

छै. . . . . . . निरुत्तर बनाब र' रहल छै| बाबू गाम सँ कैक बेर कहलखिन अ सीरक चिट्ठी- चिट्ठी र' क' राखि देलैन . . . . . . आइ सिरसिराक्षी छथिन| घरा म ककरो देह पर सुरबगर गरम कपड़ा. . . . . ! ! ' कनियाँ बजैत रहलै मुदा ओ बहीर . . जड़बत . . पाथर बनल ठाढ़! खुशी एतेक अधिक होइ छै ओ सामरहौं र रहै| लिहाफ टेबुल पर ओहिना पड़ल छलै|

२

गृह- प्रबंधक

पार्टी निसन्न क छलै आ एहि बहार एक- दोसरा क परिवार स' परिचय- पात सेहो र' रहल छलै| पंतजी अपन कनियाँ क दोस्त- महोम स' परिचय शुनुआत करैत कहलखिन - ' हिनका स' मिलू, मिसेज कावेरी ! हमर धर्मपत्नी! स्टेट बैंक म सीनियर मैनेजर छथि|' गर्वोन्नत मिसेज कावेरी सब दिस तकलनि| शर्माजी सेहो कोना पाछाँ रहिताथि; हुनका कनियाँ त' उप- निदेशक क पद पर छलखिन! मिसेज शुक्ला अ सीमा सुरक्षा बल म डेपुटी कमांडेंट छलीह स्वयं अपन परिचय देलनि| सब'क कनियाँ क बढ़ि- चढ़ि क' परिचय दैत देखि मिसेज सिन्हा हीनताबना स' जमीन म धँस' लगलीह| सब एक- स- एक उच्च पदस्थ कामकाजी महिला छै; ताहि म हिनकर अपन परिचय म कहब अ हम किछु नहिं करैत छी, गुम्हा बुझलनि| लाज धाड़ खसि पड़लनि| श्रीवास्तवजी पूछलखिन - ' सिन्हाजी आब आहाँ र अपन कनियाँ स' सबक परिचय करबियौन?' ' हूँ. . . . हूँ. . . . अवश्य| सुगंधा हमर धर्मपत्नी नहिं; अर्धांगिनी छथि! . . आधा कि सरिपहुँ हमर सम्पूर्ण शरीरक स्वामिनी! हिनक हमर जीवन म योगदानक जतेक प्रशंसा कैल जाय; कम्मे हैत! इ हिनके कुशल गृह- प्रबंधन क कमाल छनि अ हमरा सब आनंदमय जीवन- यापन क' रहल छी आ दुनू बच्चा प्रशासनिक अधिकारी अछि |' सुगंधा क छाती गर्व स' फूल' लगलनि| अन्य महिला सब कोना र कोना बहार ठाम' स' सहटबाक बाट ताक' लगलीह|

- कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: रानर सरकार क उप- सचिव, संपर्क: सी- 11, टावर- 4, टाइप- 5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट

क सामने), नङ्घ्री दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ङ्घ्री-मेल: writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. ८. अंशु कुमार सिंह- शीतक खाज


अंशु कुमार सिंह

शीतक खाज

तार्किक नुपेँ उँ देखल जाए गेँ मैथिली साहित्यक ह्लानउन्नय हम ' ग़ोवन गणेश' छी। शून्य छी। उ शून्य ओ प्रायः काना संख्याक वाम रागम नहेँग अस्तिवहीन नहेँग अछि। मुदा मैथिली साहित्यक ख्याति- लब्ध साहित्यकार, विदेह ङ्घ्री- पत्रिकाक प्रमुख संपादक महादय आदनधीय श्री गजेन्द्र वावू स मानवाक लल तैयार नहि छथि। हुनका मत छनि ओ उँ एहि शून्यकेँ धीव कए काना संख्याक दहिना रागम वैसा देल जाए गेँ उहि संख्याक मान 10 गुणा वढ़ि जेतैक (एतए काना संख्याकेँ मैथिली राषा मानल जाए)। मुदा हम की छी स हमनासँ नीक क जानि सकैत अछि? ' ग़ोवन गणेश' हवाक स्पष्ट प्रमाण हमना तखन रेटि जाङ्घत अछि जखन हम अपनहि किछु छिटफुट कविता, कथा, निवंध आदि मुल्याॆकन करैत छी।
एकटा दीर्घ अंतरालक पश्चात् आङ्घ उ पुनः मेल पठौने छथि:

" रचना सादर आमंत्रित अछि| तजन्न, ब्लास्टोप. . . " |
एक मास भेल, मनकेँ झकझोरैत क' दियैक| हमर मोनमे आएल जे जखन हमरा सन रचनाकारक रचनाकेँ प्रकटमे किओ छापि रहल छथि तँ हर्ज की| मुदा प्रश्न छल जे हम हुनकी की पठबितअनि? अनुसंधानात्मक लेख तँ हमरा बसक बात नहि थिक, तखन? बहुत दिन धरि गुनधुनमे लागल रहलहुँ| निर्णय कलहुँ जे कोनो नव कथा लिखि कए पठा दैत छियनि| मुदा लाख प्रयासक बावजूद हमरा कोनो एहन ' थीम' (विषय) बूझ' मे नहि आएल जकरा पर हम अपन कलम चला सकी| तखनहि मोनमे एकटा युक्ति सूझल! आॅफिस कार्यालयसँ घर जएबाक क्रममे एक- एक वस्तु, दृश्य, घटना आदिक गहन अवलोकन करैत जाएब, कतहुँ- ने- कतहुँ सँ कोनो ' थीम' तँ भेटिए जाएत|
सीआईआईएल केर मुख्य द्वार हाइवे सँ एकदम सटल छैक| सड़कक आकृति चौबटिया जकाँ छैक| पैदल पार पथक कोनो निर्देश नहि हेबाक कारण गाड़ी- घोड़ाक आबाजाहीक बीच लोककेँ आर- पार करब एकटा कठिन चुनौती सन छैक| हम सड़कक कातमे ठाढ़ भए सड़क खाली हेबाक प्रतीक्षा करए लागलहुँ|
चूँऽऽऽऽऽऽ, धड़ाक! आह! ओह!
एकटा स्कूटी सवार कामिनी सोझाक गाड़ीमे धक्का मारि देने रहैक| दुर्योग जे ओहि कामिनीक पाछू बैसल लगभग 20- 22 वर्षीय ओहि युवकक पयरक हड्डी टूटि गेल छलैक, जखन की ओ कामिनी आंशिक रूपसँ चोटिल भेल छलीह, एहन बुझाइत छल| हुनका उठएबाक आ सहारा देबाक लेल कैकटा हाथ एकहि संग उठि गेल रहैक जखन की गंभीर रूपसँ घायल ओहि युवकक दिस कम्मे लोकक ध्यान रहैक| बीच सड़क पर भीड़ जमा भ' गेलैक| ओ त' कहू जे हुनका सरकक साथ नीक छलनि जे एतएसँ महज 100 गजक दूरी पर बीएम अस्पताल रहैक, जतए हुनका दुनू गोटकेँ प्राथमिक उपचारक हेतु पठा देल गेलनि|
सड़क पार कएलाक बाद लिंगराजक चाहक दोकान छनि| चाह पीबाक लाथे हमहुँ ओतए बैसि गेलहुँ| एकटा सुन्दर, सौम्य महाशय दनादन सिगरेटक

कश लगा नहल छलाह| हुनक खाँखी एहि वातक स्पष्ट संकेत दए नहल छल जे सिगनेट अपन नंग देखाएव आनंद कए देने छल| जखन कोना गहल्ला द्वाना हुनक अभिवादन कएल गेलनि तँ पता लागल जे ' महाशय' वीएम अस्पतालमे डिप्टन छथि| संतोष भेल, वलू सिगनेट हिनक की विगाड़ि लेत? ओ तँ स्वयं डिप्टन छथि|

एकटा गनीव- सन लोक पानिक खाली वातलमे अपन वीमान पत्नीक लेल चाह लए नहल छलाह जे वगलक वीएम अस्पतालमे भर्ती छलीह| हुनका संग कुपोषणक शिकान एकटा 5- 6 वर्षीय कनकिनवी नहनि| मैल वस्त्न, उमनाएल केश, आँखिमे काँची, धनुषाकान टाँग आ कदीमा- सन पेट| कोना विस्कुटक पैकेट दिस ललचाना क' नहल छलीह|

" कतेक दाम छैक एकन?" वाप दोकानदानसँ पूछलकैक|

" दस नुपैया|"

. . . .

ववानाक वहना उतनि गेलैक| केकक दिस ललचाना कनैत आ डेन पूछलक- एकन?

" दू नुपैया|"

' एकटा द' दिऔक|" वाप अपन कनकिनवीकेँ आ केक द' कए आकना वहलएवाक असफल प्रयास कए नहल छलाह मुदा ओ नहि मानलक| ओ कनकिनवी केक घुमाकए दून फेकि देलक| वाप केक उठाकए आकना झाडि- पोछि अपना जवीमे नाखि लेलक| कनकिनवीक अविनल नुदन जानी नहैक| वापक ध्यान आव ओमहन नहि छलैक| ओ अकानतेँ हमना दिस देखैत वाजए लागलाह:

" की कही भाय! ओ अस्पताल वला डकैत छैक, डकैत! नाशिक वानह वजे सनकानी अस्पतालमे कोना डिप्टन नहि नहैक एहिलेल हम एहि डकैतक फेनमे पड़ि गेलहुँ| एखन धनि 2, 500 नु. खर्चा कना देलक अछि आ पता नहि. . . |"

" भगवान गनीव लोककेँ वीमानी देत किएक छथिन?" ओ वात आकना हलकसँ नहि निकलि सकलैक|

हम ओतएसँ आगू बढ़लहुँ।

आब हम दोसर मुख्य सड़क पर छलहुँ। एतए सड़कक बाम कातमे एकटा डाक्टरक प्राइवेट क्लिनिक छलनि। ओ प्रायः अपन कहुनी टेबुल पर टिकौने अपन गाल थाम्हने बैसल रहैत छथि। सड़कसँ आवाजाही करए बला शायद कोनो लोक हेतैक जेकरा ओ गिद्ध- दृष्टिएँ नहि देखैत होथि। हुनका लोकबागकेँ स्वस्थ देख ईर्ष्या होइत छलनि (संभवतः) | ओ (संभवतः) मोनहि- मोन सोचैत रहैत छलाह, "ई लोक सभ स्वस्थ किएक छैक? बीमार भए हमरा लग ईलाजक हेतु किएक नहि अबैत अछि?"

हम आगू बढ़ैत छी।

किछु दूर चललाक पश्चात्, सड़कक दहिना कात एकटा बुढ़िया फूटपाथ पर साग बेचि रहल छलीह। हुनका छिट्टामे कुल मिलाकए तीन तरहक साग, 15- 20 नेबो आ किछुएक किलोक लगपास हरियर मिरचाइ छलनि। ओतए एकटा गाड़ी रुकल। ओहि गाड़ीसँ निकलए बला युगलक ठाठ देखबा योग्य रहैत। पूछला पर बुढ़िया कहलकैक, "साग 5 रु. मुट्ठा" | दाम सुनि ओहि युगलकेँ लागलैक जेना ओ बुढ़िया 5 रु. मुट्ठा साग बेचिकए कोनो क्राइम क' रहल छलैक। आब शुरू भेलैक मोल- मोलाय आ अंततः सागक दर तय भेलैक 4 रु. मुट्ठा। युगल एक मुट्ठा साग लेलक 4 रु. केर छुट्टा पाइ ओकरा थमबैत, चलैत बनल। हम ई सभ घटनाक्रम देख चुकल छलहुँ, एहिलेल दर जानब आब हमरा लेल आवश्यक नहि रहि गेल छल। हमहुँ दू मुट्ठा साग लेलहुँ आ दू- टकियाक चारिटा सिक्का ओकरा थमा देलिऐक। एहिपर बुढ़ियाक धैर्य टूटि गेलैक। ओ बाजलि- बाबू दू टका आर दिऔक। हम कहलिऐक, "एखन तँ अहाँ ओकरा सभकेँ दू टक मुट्ठा साग देने छियैक।"

ओ बाजलि- "बाबू, 300 टकाक माल आनने छलियैक, कच्चा सौदा छैक, आइ बुझाइत नै छैक जे पुँजिओ ऊपर भ' सकतै।"

हम कहलियैक, "अच्छा अहाँ एहन करू, हमरा पाँच मुट्ठा साग आर द' दिअ।" ई कहि हम ओकरासँ पूर्वमे देल गेल पाइ घुरा कए 35 टका द' आगू बढ़लहुँ।

ओतएसँ बढ़लाक बाद हम मानहि- मान अपन तुलना ओहि कान बलासँ धनिक लोकसँ कए रहल छलहुँ। हमरा नजरिमे ओ तुच्छ लागि रहल छलाह। ओखन कि हम स्वयंकेँ बड़्ड बड़का दयावान बुझि रहल छलहुँ। "आखिर सागक पाँचटा अगिनिक्का मूड्डा कीनि ओहि बुढ़िया पर उपकार ओ करि छलहुँ।"

आब हम धीर- धीर अपन घनक (किरायाक) सीढ़ी चढ़ि रहल छलहुँ। कपड़ा बदलि हाथ पयर धोलहुँ, किछु कालक बाद टी. बी आन कलहुँ तँ "कौन बनेगा करोड़पति अर्थात् करोसी" प्रसारित भ' रहल छलैक। हॉट- सीट पर बैसल छलीह महाराष्ट्रक कोनो छोट- सन गामसँ आएल एकटा 30- 35 वर्षीय विधवा। कार्यक्रमक संचालक श्री अमिताभ बच्चनसँ गपशपक क्रममे ओ बतौलनि जे, "हुनक पति एक साधारण किसान छलाह, ओ कपासक खेती हेतु बैंकसँ 2 लाख टका ऋण लेने छलाह। ऋण- वसूली हेतु बैंकक तरफक दबाब बढलैक जे ओ दू साल वर्ष पूर्व आत्महत्या क' लेलथि। आब हम स्वयं खेतमे काज करैत छी। जँ करोसी सँ किछु रकम जीति सकलहुँ तँ क्रमशः साठ आ तीन वर्षीय बच्चियाक लालन- पालन, शिक्षा- दीक्षा आदि पर खर्च करब।"

घड़ी देखलहुँ तँ पता चलल जे नाकिक 10 बजैत रहैक। कनेक कालक बाद आँखि मूनि चिंतनक मुद्रामे सोचए लागलहुँ जे उक्त घटनाक्रम सभमे सँ कोनो "थीम" उठाओल जा सकैत अछि की? सत्य कही तँ एहि सभ घटनाक्रम मे सँ सभ सभ "थीम" तँ भ' ए सकैत छल- विपरीत सत्ताक प्रति सहजाकर्षण, व्यसन विवेककेँ नष्ट कए दैत छैक, गरीबक दुर्गन्ध : बीमारी, बिना विज्ञापन बला शिक्षन, दयावान, किसानक दुर्दशा आदि।

. . . लाख प्रयास कलहुँ जे एहिमे सँ कोनो एक थीमकेँ आधार बनाकए किछु लिख ली, मुदा कलम नहि चलि सकल। आब बुझ' मे आबि रहल अछि जे कोनो आन रचनाकारक कविता कथा पर (रचनाव, आलोचनात्मक नहि) टिप्पणी कए देब कतेक आसान छैक, मुदा अपना बेरमे. . . ।

हम निष्कर्ष पर पहुँच गेल रही जे, "किछु लिखबाक लेल मात्र ' थीम' नहि अपितु भाषा आ अभिव्यक्ति- कौशल सेहो चाही, जकर हमरामे सर्वथा

अ्रगव अ्छि|"
अ्राव ॐ गॐट्टन वावू रून कहिअ नगदा कनगाह गँ ह्रीमानदानीसँ अमा प्रार्थना क' लवनि| अ्रान सक्का की?
- डि. शंगु क्ुमान सिंह, वनीय निसार्स पर्सन, नाष्ट्नीय अ्नुवाद मिशन, रानगीय राषा संस्थान, मैसुनू संपर्क सूत्र- 9986890429

अ्पन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ|

२. ९. शिव शंकन- कथा- पाथन
शिव शंकन
कथा- पाथन

(1)

कथा- 'पाथर'

ओहि परोपट्टामे मिथलेश बाबूक मकानक जोड़ा नहि छल. दूरहिसँ पता चलि जाइत छल. ऐसक कोनो जवाब नहि। झाँटि-बिहाड़िमे पहाड़ जेकाँ ठाढ़. ने टस-सँ-मस। मकान एतेक चर्चित छल - जे टोलक नामे मिथिला टोल पड़ि गेल।

मिथलेश बाबूक दलान, खरिहिआन आ घर सभ बड्ड भव्य छल - दलान आ खरिहिआन बेस नमहर। टोलमे कोनो शादी-बिआह हुअए तऽ बरिआतिक गेल हुनकरे दलानक आश्रय छल। हुनकर दलान कतेको बेटीकेँ कन्यादान करबा चुकल छल। भगानक समयमे हुनकर दलानक स्वरूप रंगीन भऽ जाइत छल. वसंतक बयार बहए लागैत छल। चूँकि ओहि टोलमे तेहन कोनो तरहक स्थान नहि छल जतऽ कि कोनो तरहक सामाजिक उत्सवक आयोजन नीक जेकाँ करल जा सकैत छल, नहि तऽ कोनो तरहक जनवासा छल आ नहि तऽ कोनो तरहक स्कूले छल। हालाँकि एकटा मिडिल स्कूल छल मुदा ओ टोलसँ दूर, बाधमे छल, जेकर कि शादी-बिआहमे कोनो उपयोगीता नहि छल।

मिथलेश बाबूक जमानामे मखान खरइ वाला मल्लाह सभ मखानक समयमे, हुनके दरवाजा पर डेरा देने रहैत छल। टोलमे कोनो पंचैती हुअए तऽ मिथलेश बाबूक दलान पर पंचायतक बैसाड़ होअए।

भदबरिआमे जखन बदरी लागि जाइत छल, तऽ चारि-पाँचटा ताशक पार्टी गुलाम-बीबी-एक्का-दहलाक गणितमे ओझराएल. अपना जोड़ीकेँ जीतबाक दावेदारीमे एड़ी-चोटीक जोर लगाबए।

②

कखनो-काल बीच-बीचमे माहौल गरमा जाइत छल। कोनो-कोनो पार्टी क्षणिक आवेशक बाढ़िमे भसिया कऽ उकटा-पैंची करऽ लागैत छल। लोक क्षणिक आवेशमे केहन उग्र रूप धारण कऽ लैत अछि आ केहन विकट परिस्थिति आबि जाइत अछि। एकर छोट-मोट उदाहरण एहिठाम देखाए पड़ैत छल। मुदा, अंतमे सभ किछु शान्त भऽ जाइत छल।

मिथिलेश बाबूक आदत छलन्हि - दू टाइम चाय पीबाक - भोर आ साँझमे। ओहि टाइम दलान पर जे कोइ व्यक्ति उपस्थित रहथि, हुनका चाय मिलनाए अनिवार्य बूझू। ताहि हेतु कतेको लोक चाहक लोभे दरबाजा पर पैटकुनिआ देने रहथि।

दलानक आगूमे खरिहिआन बेस नमहर छल। खरिहिआनक चारू कात बेली, चम्पा-चमेली, गुलाब, सींगहार, अड़हुल आदि फूलक गाछ लागल। खरिहिआन कम पुष्पवाटिका अधिक बुझाइत छल। खरिहिआनक चारू कात बाँसक जाफरी लागल आ दूटा गेट छल। दूनू गेट पर अशोकक गाछ - ई गाछ आगान्तुक स्वागतमे सदिखन तैयार रहैत छल। केहनो तमसाएल व्यक्ति हुनकर दरबाजा पर पहुँचि जाइत छल तऽ हुनकर तामस छू-मंतर भऽ जाइत छल। हुनकर दलानक हवामे एकटा दोसरे मादिरा मिश्रित छल आहि मादिराकेँ पान करलाक उपरान्त मादिरा तामससँ प्रतिक्रिया कऽ तामसकेँ उदासीन बना दैत छल। खरिहिआनक एक कातमे चापाकल छल, जेकर शीतल आ मधुर जलसँ लोक तृप्ति होएत छल।

दलानक बगलसँ आँगन जएबाक रास्ता छल।

(3)

एहि प्रकारे पूरबसँ दलान आ एकटा घर, उत्तरसँ दूटा घर, पश्चिमसँ दूटा घर आ दक्षिणसँ दूटा घर— समटा पक्का - पोखरिया-पाटन। चारू कातसँ घर, बीचमे आँगन बेस नमहर। पछबरिया आ उत्तरबरिया कोनमे छत पर जएबाक लेल सीढ़ी छल। घर सभ बेस ओल-फैल आ बड्ड सुन्दर। घरमे सुख-शांतिक सरिता बहैत छल।

मिथलेश बाबूक स्वभाव बड्ड नीक। हुनक स्वभावमे शामिल छल- शांतचित्त, समाजसेवी, उदारचित्त, परोपकारी। सामाजिक कार्यमे सदिखन आगू रहब। कन्याकेँ शिक्षामे आगू करएमे विशेष योगदान - सचमुच गौ आदमी। तेहने हुनकर धर्मपत्नी - सुशीला देवी। मिथलेश बाबूक खेती-बाड़ी बड्ड विशाल, दरवाजा पर सदिखन एकटा महीस आ एकटा गाय - दूधक लेल। जहियासँ ट्रैक्टर खरीद लेलन्हि ओहि दिनसँ बथान बरदविहीन भऽ गेल।

मिथलेश बाबूकेँ दूटा बेटा - नरेश आ गणेश। दुनूटा बेटा नान्हिटासँ बदमाश - एकटा अगत्ती तऽ दोसर खुरलुच्ची। मिथलेश बाबू कतेक प्रयास करलन्हि - जे बेटा पढ़ि-लिखि मनुक्ख बनि जाए। मुदा दुनू बेटा शपथ खा लेने छल कि सूरज देवता पूरबसँ पश्चिममे उगऽ लगताह, पढ़ब नहि, चाहे जे किछु भऽ जाए। हालाँकि मिथलेश बाबू पढ़ाबऽ खातिर दरवाजा पर एकटा मास्टर साहेबकेँ सेहो रखलन्हि, मुदा परिणाम विपरीते रहल। एतेक धरि सफलता मिलल, जे खीचि-तीरि कऽ नरेश आठवाँ तक आ गणेश सातवाँ तक पढ़िकऽ अंगूठा छाप कलंककेँ धोइ देलक

(4)

आ साक्षर बनि गेल। दूनूटा बेटा टोलक लुच्चा-लफंगाक सत्संगमे पड़िकऽ सुपुत्रसँ परिवर्तित भऽ कुपुत्र बनि गेल। दूनूटा बेटा बाइक लऽ कऽ दिनभरि चौक-चौराहा आ बाजारमे छिछियाइत रहैत छल। चौकक चाहक दोकान पर गुलछर्रा छोड़इत आ राजनीति पर बकलेल्ही करैत अपनाकेँ राजनेता सिद्ध करबाक विफल प्रयास करए। मिलै-जुलै कऽ ई दिनचर्या बनि चुकल छल। दूनू बेटाक क्रियाकलाप देखिकऽ मिथलेश बाबूक आ हुनक पत्नीकेँ टेंशन बढ़ल जाइत छल। अंतमे कनिआ परामर्श देलखिन्हि - "जे नरेशकेँ विवाह कऽ दिऔक। शायद घर-गृहस्थीमे ओझरा कए सुधरि जाए।" मिथलेश बाबू नरेशकेँ विवाह कऽ देलखिन्हि। मुदा नरेश खेती-गृहस्थी देखबाक बदला कनियामे ओझरा गेल, कनियाकेँ आगू-पाछू करए लागल, दिनभरि कनियामे सटल रहैत छल। मतलब कनियाकेँ बॉडीगार्ड बनि गेल।

गणेशक सेहो विवाह करबाक वयस भऽ गेल छल। गणेशकेँ पड़ोसक गाम करनौतीमे एकटा दोसर जातिक कन्यासँ प्रेम-प्रसंग चलैत छल। लड़की नव सांस्कृतिक रंगमे रंगल छल जेकरा ऊपर पाश्चात्य सांस्कृतिक मैल जमल छल, फैशनक बोखार लागल छल लड़की ऊपरसँ गोर मुदा भीतरिया कारी। एहि प्रेम-प्रसंगक बिहाड़ि कतेक बेर उठि चुकल छल। अड़ोस-पड़ोसमे, चौक-चौराहा पर आ मौगी-मेहरमे सेहो कानाफूसी होमऽ लागल छल। एहि तरहक प्रेम-प्रसंगक चर्चा आगिक लपटि जेकाँ बहुत तेजीसँ फैलि जाइत अछि। गामक चौक पर एहन खबरिकेँ लोक नूनगर-चहटगर बनाकऽ खूब सुनाबैत अछि. जेना-आइ दूनूटाकेँ

(5)

ओहि बाधमे देखलहूँ, काल्हि बाजारक सिनेमा हॉलमे आ परसू मंदिरक पछुआड़मे। मिथिलेश बाबूकेँ सेहो एहि खबरिकेँ बारेमे एक दिन पता चलि गेल। मिथिलेश बाबू आ हुनक पत्नी गणेशकेँ कतेक बेर समझेबाक प्रयास कएलन्हि परञ्च गणेश नहि मानलक। अंतमे मिथिलेश बाबू मर्माहत भऽ गेलाह आ गणेशकेँ बिआह कऽ देखलन्हि।

वर्ष धरि घर-गृहस्थी सभ ठीके-ठाक चालि रहल छल। बरखक बादमे घरमे खटपटक सुगबुगाहट होमए लागल। दूनू पुतोहु आ सासमे अनबन शुरू होमए लागल, करबनो काजक लेल आ करबनो कोनो वस्तुक लेल। धीरे-धीरे ई अनबन कहियो-काल महाभारतक रूप लऽ लैत छल। घरमे जतऽ शांतिक सरिता बहैत छल ओतऽ आब अशांतिक आगि लागि गेल। लोक चाहे तऽ नमहर बातकेँ परदासँ झाँपि कऽ ओकरा फूसि बना सकैत अछि आ छोट बातमे मिरचाइ लगाकेँ ओकरा बतंगड़ बना सकैत अछि। जाधरि लोक परिवार आ समाजमे सामंजस्यताक लेल नहि बीनत ताधरि सुख-शांतिक कल्पना करब असंभव अछि।

रोज-रोज कलहसँ त्रस्त भए मिथिलेश बाबूक ब्लडप्रेशर हाई रहए लागल, ओ अस्वस्थ भऽ गेलाह। एक दिनक दिलक दौरा पड़लन्हि ओ कालक गालमे समा गेलाह आ स्वर्गवास भऽ गेलाह। एहि सदमासँ पीड़ित हुनक पत्नी अस्वस्थ रहए लगलीह ओ सेहो एक दिन भगवानक घर विदा भऽ गेलीह।

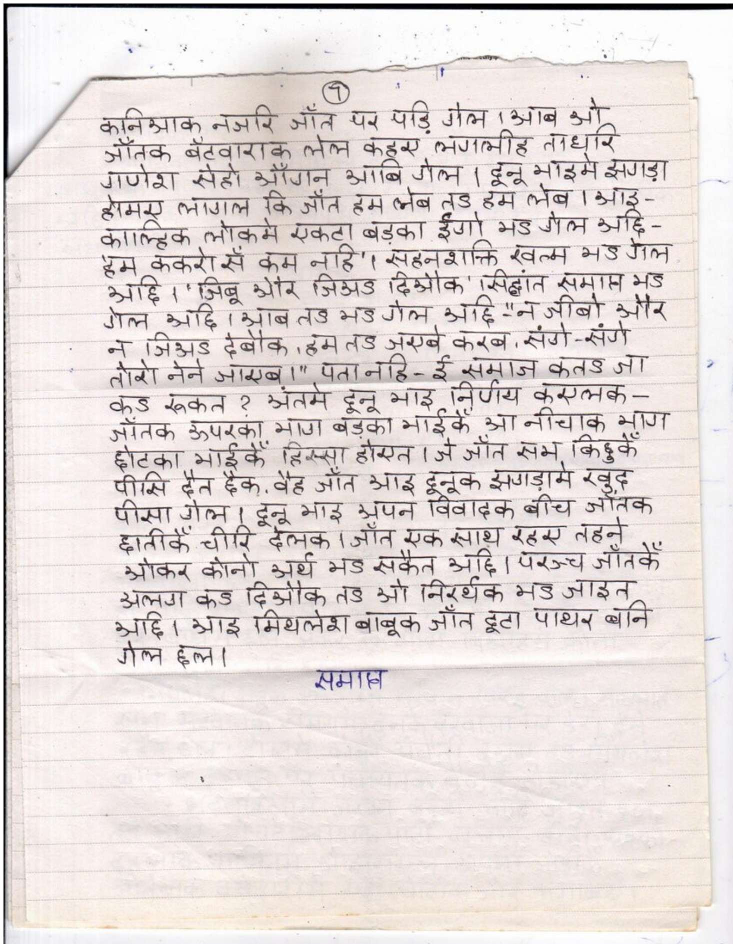
सभ किछु समय पर हुअए तऽ नीक लगैत अछि

⑥

मुदा समयसँ पूर्व होएब आ समयक उपरान्त तँ लोकक दिलमे कचोट होइत अछि। ईश्वरक नियमक चक्र समयानुकूल घूमैत अछि, सभ किछु नियत समय पर होइत अछि - समय पर सर्दी, समय पर गर्मी आ समय पर बरसात। मुदा हमरा लोकनि स्वार्थसँ वशीभूत भऽ कऽ प्रकृतिकेँ साथ छेड़छाड़ करैत छी। ताहि हेतु परिणाम विपरीत आबि जाइत अछि।

एहि बीच नरेशकेँ एकटा बेटा भऽ गेल आ गणेशकेँ एकटा बेटी जन्म लेलक। आब घरक महाभारत विकराल रूप धारण कऽ लेलक, रोज कोनो-ने-कोनो फसाद, पानि माथसँ ऊपर भेल जा रहल छल। दुनू भाइ सेहो एक-दोसरकेँ देखऽ नहि चाहैत छल। अंतमे निर्णय भेल - रवि दिन पाँचटा पंच बजाकऽ सभ किछुक बँटवारा कऽ देल जाए। रवि दिन साँझखन पंच सभ अएलाह - बँटबाक प्रक्रिया शुरू भेल। खेत-पथारि, कलम-गाछी, घर-द्वारि सभ किछुक बँटबारा भऽ गेल। बड़का बेटाकेँ तीनटा घर, छोटका बेटाकेँ तीनटा घर, दलान साझिआ आ एकटा घरक दाम लगाएल गेल। काल्हि तक जे सभ किछु एक जगह छल आइ ओ सभटा दू जगह भऽ गेल, एक-दोसरसँ सभ किछु अलग भऽ गेल। बँटैत-बँटैत राति भऽ गेल आ पंच सभ अपन-अपन घर चालि गेलाह।

दरवाजा परसँ नरेश आँगन आएल, अपना हिस्सामे पड़ल उत्तरबरिया घरक दुआरि पर पड़ल जाँत पर ओकर नजरि पड़ि गेल। एखन धरि जाँतक बँटबारा नहि भेल छल, जाँतपर ककरो नजरि नहि गेल छल। नरेश जाँतकेँ घरमे राखऽ लागल, तखने गणेशक



(7)

कनिआक नजरि जाँत पर पड़ि गेल। आब ओ जाँतक बँटवाराक लेल कहए लगलीह ताधरि गणेश सेहो आँगन आबि गेल। दूनू भाइमे झगड़ा होमए लागल कि जाँत हम लेब तऽ हम लेब। आइ-काल्हिक लोकमे एकटा बड़का ईगो भऽ गेल अछि- हम ककरोसँ कम नहि'। सहनशक्ति खत्म भऽ गेल अछि। 'जिबू और जिअऽ दिऔक' सिद्धांत समाप्त भऽ गेल अछि। आब तऽ भऽ गेल अछि "न जीबो और न जिअऽ देबौक, हम तऽ जएबे करब, संगे-संगे तोरो नेने जाएब।" पता नहि- ई समाज कतऽ जा कऽ रूकत? अंतमे दूनू भाइ निर्णय करलक- जाँतक ऊपरका भाग बड़का भाईकेँ आ नीचाक भाग छोटका भाईकेँ हिस्सा होएत। जे जाँत सभ किछुकेँ पीसि दैत छैक, वैह जाँत आइ दूनूक झगड़ामे खुद पीसा गेल। दूनू भाइ अपन विवादक बीच जाँतक छातीकेँ चीरि देलक। जाँत एक साथ रहए तहने ओकर कोनो अर्थ भऽ सकैत अछि। परञ्च जाँतकेँ अलग कऽ दिऔक तऽ ओ निरर्थक भऽ जाइत अछि। आइ मिथिलेश बाबूक जाँत टूटा पाथर बनि गेल छल।

समाप्त

- शिव शंकन, म. नं. ११९९, सेक्टन- २, पानी टंकी क निकट, रूनीदावाद, वल्लरगढ़, हनियाधा। ई- पत्र- shivshankar0040@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. १०. आशीष अनचिन्हार- पसनल ग्रम खग्म हगेँ४ गजलक संदर्भमे



ञाशीष ञनविह्नान

पसनल ग्रम खग्न हगौ8 गजलक संदर्भम

1

ञमिगाभ वच्चन (Amitabh Bachchan) 2022 म रुन ञपन सुपनहिट क्विज (श्ा 'कौन वनगा कनाड़पगि (Kaun Banega Crorepati)' सँ टीवीपन ठलाह| ठहि "कौन वनगा कनाड़पगि" कन ध्रामाम ठकरा कंटश्ंट ञमिगाभ वच्चन (Amitabh Bachchan KBC) क सामन हिट सीटपन वैसल छथि ञा विग वी कंटश्ंटसँ सवाल कइ नहल छथिन| विग वी कंटश्ंटसँ पुछै छथिन- 'ठहिममसँ कान वस्तुम जीपीठस कन टक्नालिजी लागल छै?' ठहि संग वच्चन जी कंटश्ंटकँ वानिटा ञाप्शन दै छथिन|

ञमिगाभ वच्चन ठहि सवालक जवाव क लिठ ञाप्शन दैग छथिन- 'A) टाइपनाइटन, B) टलीविजन, C) सैटलाइट, D) 2 हजानक नाट.' सामन वैसल कंटश्ंट ठहि प्रश्नक जवावम D ञाप्शन यानी 2 हजानक नाटकँ चुनैग छथि| ठहिपन विग वी कहलखिन ञ ञी जवाव गलग ञछि मुदा कंटश्ंटकँ ठहिपन विश्वास नै हाइग छै| ञा कहै छै 'ञहाँ हमना संग मजाक (प्रैंक) कइ नहल छी न"

ठहिपन विग वी कहैग छथिन ञ ञहाँक उत्तन सवम गलग ञछि| कंटश्ंट रुन कहै छनि ञ हम न्यूजम गँ इठह दखन नहियै गँ ठहिम हमन कान गलगी? गलगी गँ पत्रकान सरहक छै| ञमिगाभ वच्चन ठहिपन कहैग छथिन- गलगी पत्रकानक हगै मुदा नाकसान गँ ञहाँक रल न, ञा ञागु कहैग छथिन ञ रुक खवनिसँ सदिखन वववाक चाही| ञा कहलखिन- 'ह्लान जहाँसँ रटठ वटानि ली मुदा ञाहिसँ पहिन ञाकना चक कइ ली ञ ञी सही छै

वा कि नै" | प्रामा (शयन कनैग सानी टी. री द्वाना ओ लिखल (गल कैप्लन छल- ' हम सर एकटा एहन लाककँ ञानै छी ञ हमना ञ्नवैनिरुञ्ञ्त सनसनी खवनि सूनावैए| ञाहन लाककँ कमंटम टैग कनु ञ्ा दूनकासँ कढ़ ञ- ' ह्नान जहाँसँ रटए वटानि ली मूदा ञाहिसँ पहिन ञाकना वक कइ ली ञ ओ सही छै वा कि नै" | ओ पूना रीतिया एहि लिंकपन दखि सकैग छी-
ht t ps : / / www. yout ube. c om/ wat c h?v=r 5J S2f ZU 70U

2

उपनम हम टीवी वला प्रसंग एहि लल ललहूँ ञ वर्ख 2021 म प्रकाशिग गानानंद झा ' गनूध' जीक कथिग गजल संग्रह " घन- घन ञ्ञाग नहय" कन गूमिका पढ़वाक लल रटल| रटल गँ पूना पाथी मूदा हम गूमिक धनि नहव| एहि संग्रहम कूल दूटा गूमिका छै पहिल गंगेश गुंजन जीक लिखल ञ्ा गकन वाद दासन ञूपन लखक द्वाना| गनूधजी ञूपन गूमिकाम लिखै छथि (पृष्ठ- 11) - " ञाना गजलक किछू व्याकनध सहा हाञ्ञग छैक| ञना किछू विद्वान साहित्य प्रमीक ञूरिमग छनि| गाहि सँ हम पूर्णग8 ञूनरिह्न नहल छी| विगग कगका दशक सँ पत्र- पत्रिका म छिड़ियैल गजल सर पढ़वाक सूयाग रटल ञूछि, वैह हमन लिखल गजलक ञ्ाधान नहल ञूछि| गँ ञँ गजलक व्याकनधक ञूनूनुप ओ गजल सर ञूनहिट हा गँ गाहि लल ञमा वाहव"
गनूधजीक लिखलसँ ओ स्पष्ट ञूछि ञ ञा पत्र- पत्रिकाम प्रकाशिग गजल पढ़ि एहन लिखलनि| ञ्ा गँञ्ञ ञूमिगार वव्वनकँ कहए पड़ैग छनि- ह्नान जहाँसँ रटए वटानि ली मूदा ञाहिसँ पहिन ञाकना वक कइ ली ञ ओ सही छै वा कि नै" | ञ्ा गाहिम गनूधजी रूल रइ (गल छथि ञ्ा एहि उम्रम जा कइ सर महनगि नाकसान रइ (गलनि| | ञाना हम गँ कहव ञ गनूधजी सहीसँ काना पत्रिका नै पढ़न हगा कानध ञँ पढ़न नहिगथि गँ दूनका जीवन झा, कविवन सीगानाम झा, मधूपजी ञ्ादिक गजल रटल नहिगनि ञ्ा दूनका गजलक व्याकनधसँ पनिवय सहा रल नहिगनि| ञ्ाश्चर्य ञ गनूधजी " रागगी मंडन" सन पत्रिकासँ जूड़ल छथि ञ्ा ञा ञूध्ययन कनवाम पछूञ्ाएल नहै छथि| गंगेश गुंजनजी ञूपन गूमिकाम गाएल गीग (गन छथि ञाहिम काना नव वाग

नै छै| बस हमरा हुनकासँ एकटा बात पूछबाक अछि जे जीवन झा, कविवर सीताराम झा, मधुपजी आदि सन गजलक व्याकरणपर गजल लिखने छथि तइ हिसाबे जाहि सन आधुनिक गजल पंडित कहता कि नै कहता (देखू पृष्ठ- 8) |

कुल मिला कऽ " घन- घन इजोत हृदय" नामक पोथीमे जे रचना सब अछि से गजल नै अछि, कारण जाहिमे बहर- काफिया आदि जे गजलक अनिवार्य तत्व छै तकर पालन नहि भेल छै| जे रचना सब कविता, गीत आ कि आन किछु भऽ सकैए मुदा गजल नै अछि| जिनका ई बुझाइत होइन जे एहिमे बहर छै ओ बहरक निर्धारण मात्रा सहित कऽ देथि||

3

मनोज शाण्डिल्य केर कथित गजल संग्रह " बाजब बदलि रहल छै" केर भूमिकाक अंश देखल जाए- - " हमरा लेल गजलमे मुख्यतः दूटा तत्व आवश्यक अछि, जकर हम यथासंभव अनुपालन करैत छी| प्रथम अछि, गजलक पारम्परिक शिल्पक आधारपर, मतला, बहर, रदीफ आ काफियाक अनुपालन| एतय दूटा विन्दुपर हम छूट लैत छी- पहिल ई जे, हम मकतामे तखल्लुसक प्रयोग नहिए जकाँ करैत छी आ दोसर ई जे हम बहरक अनुपालन अंकगणितीय पद्धतिक बजाए ध्वनिक आधारपर करैत छी| से एहि कारणे जे हम मानैत छी जे तखल्लुसक प्रयोग कयने गजलमे कोनो गुणात्मक वृद्धि नहि होइत छै आ जहाँ धरि बहरक सवाल छैक तँ मात्रा- गणनाक उद्देश्य ई होइत छैक जे उच्चारणमे संतुलन बनल रहै, जकर अनुपालन हम ध्वनिक आधारपर करिते छी| दोसर आवश्यक तत्व जे हमरा लेल अछि से अछि कथ्य| एहि मामिलामे हम हिन्दीक कालजयी गजलकार दुष्यंत कुमारक ' स्कूल' क अनुगामी छी" , (पृष्ठ- 9)

एहि अंशमे सब भ्रम- भ्रम अछि मुदा दू टा नमहर भ्रमपर हम बात करब| पहिल भूमिकामे जे बहरक अनुपालन ध्वनिक आधारपर करबाक बात भेल छै से आखिर की छै? कोन छंद, कोन बहर, कोन एहन मीटर छै जे कि ध्वनिक निश्चित आधारपर नै छै| सब छै जे मात्रिक छंदमे दोहाकेँ लिअ तँ 13- 11 केर अलाव जाहिमे आन नियमक पालन करए पड़ैत छै| तँइ जे किया ई

कहथि जे हम बहरक आधारपर गजल लिखैत छी तँ सीधे बुझि लिअ जे ओ सुविधावादी छथि आ अपना हिसाबेँ बाजि रहल छथि कारण जखन कोनो निश्चित बहरपर रचना होइत छैक आ छंदबद्ध होइत अछि जेना अनुष्टुप, दोहा, सवैया, गजल आदि। मुदा जँ अनिश्चित बहरक आधारपर रचना होइत छैक तँ ओ आधुनिक कविता, गीत आदि होइत। एहि भूमिकाक संगसँ आपत्तिजनक बात ई जे लेखक अपन कमजोरी नुकेबाक लेल दुष्यंत कुमार केर नाम लए लेलाह। दुष्यंत कुमार हिंदी गजलमे कथ्य केर परिवर्तन कएलाह मुदा बहरक संग। जी हाँ, अंकगणितीय बहरक पालन करैत। हम हुनक शेर उदाहरण दैत छी बएह उदाहरण संग एकटा शेर दए रहल छी-

हो गई है / पीर पर्वत / -सी पिघलनी / चाहिए,
इस हिमालय / से कोई गं / गा निकलनी / चाहिए

एहि गजल बहर अछि 2122 / 2122 / 2122 / 212 आब अहाँ संग ओ गजलकेँ उपना कए जाँचि सकैत छी।

मत कहो आकाश में कुहरा घना है
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है

एहि गजल बहर अछि 2122 / 2122 / 2122 आब अहाँ संग ओ गजलकेँ उपना कए जाँचि सकैत छी।
एकर अतिरिक्त दुष्यंत कुमारक आनो गजलकेँ अहाँ संग अपने जाँचि सकैत छी। मैथिलक बारेमे हास्य छै जे जखन एकटा सबूत भेटि जाइत छै तखन ओ दोसर नाम लए लैत छैक हमरा बुझल अछि जे मनोज शाण्डिल्य केर भविष्यक पाथी संगमे अदम गोंडवी आ कि आनो नाम लीखल भेटत तँए हम अही शेर अदम गोंडवीक दू टा गजल आ ओकर बहर देखा रहल छी-

ग़ज़ल को ले चलो अब गाँव के दिलकश नज़ारों में
मुसल्सल फ़न का दम घुटता है इन अदबी इदारों में

एहि गजल बह्र अछि 1222 / 1222 / 1222 / 1222 आब अहाँ सभ ऐ गजलकेँ उपरा कऽ जाँचि सकैत छी।

सुख के एहसास को भेना- सूखन तक ले चलो
या अदब को मुश्किलों की अंजुमन तक ले चलो

एहि गजल बह्र अछि 2122 / 2122 / 2122 / 212 आब अहाँ सभ ऐ गजलकेँ उपरा कऽ जाँचि सकैत छी।
कुल मिला कऽ देखी तँ मनोज शाण्डिल्य अपन कमजोरीकेँ दूर्खैत कुमारपन अनापित कऽ भ्रम पसारने छथि। पाठककेँ तय करबाक छनि जे एहन भ्रमित लेखक कोन रचना संगे की करबाक चाही। कुल मिला कऽ एक बेर फेर हम कही जे "बाजब बदलि रहल छै" नामक पोथीमे जे रचना सभ अछि से गजल नै अछि कारण एहिमे बह्रक पालन नै अछि। ओ रचना सभ कविता, गीत आ कि आन किछु भऽ सकैए मुदा गजल नै अछि।
4
"नव युवक ओनिआन" ई पोथी छनि प्रेमचंद पंकजकेँ। एहिमे संकलित रचना सभकेँ हुनका "कथित गजल" कहबामे सही लाज होइत अछि। एहि पोथीक भूमिका लेखक छथि कमलमोहन चुन्नू। चुन्नूजीक कथित गजल संग्रहक आलोचना हम कऽ चुकल छी आ जे पढ़ने होएताह से बुझित होएताह जे चुन्नूजीक लिखल भूमिका बला पोथीक रचनाक स्तर कहन होतै खास कऽ जखन कि ओकरा जखन गजल कहल गेल हो। कुल मिला कऽ बुझिए गेल हेबै जे अहू पोथीक रचना सभ गजल नै अछि।
5
"टाँगल मालायम चाँद" ई कथित गजल संग्रह छनि नामश्वर निशांत जीक। एहि पोथीमे कुल दू टा भूमिका अछि पहिल नामलोचन ठाकुरजीक आ दोसर निशांतजीक अपन। संगहि- संग श्यानदा सिन्हाजीक आशीर्वचन सेहो छैक पोथीक पछिला कभर पजपर। नामलोचनजी अपन भूमिकामे लिखैत छथि जे " मतला, काफिया, बह्र आदि एकर बाधा नहि होइत छैक" (पृष्ठ-

6), नामलावन ऊी गऊल विधाक नहि छलाह गञ्ऽया एहन वाग साहसपूर्वक लीखि सकँग छलाह। नामश्चनऊी ञ्पन गुमिकाम लिखँ छथि ऊ ". . गँ वहन (छंद) क दृष्टिएँ ऊटिल नहिगा काना गाषाम लिखल गऊल (श्रष्ठ ञा सुंदन ग' ऊाञ्ऽछ", (पृष्ठ- 9), ञा ञ्ऽी वाग सही छँ मुदा दुख ञ्गव ऊ नामश्चन ऊीक कथिग गऊल सगम वहनक काना (ठास प्रमाध नहि गटल। यथ- कृष्ण वहन मीनक प्रवाह सन वूसना ऊाञ्ऽग छँ मुदा ऊाहा काना सायास नुपम नहि छँ। संगवगऽ ञान ऊकाँ निश्चांगऊी ञ्ऽएह वूसँ छथि ऊ ऊहन पाँगि लिखा (गलँ सएह वहन (छंद) गऽ (गलँ।

कुल मिला कऽ ञ्ड पाथीक नवना सग गऊल नहि ञ्छि कानध एहिम वहनक पालन नँ ञ्छि। मुदा हमना ञ्ऽी मानवाम काना संकाव नहि ऊ एहि संग्रह नवना सगम कानिया ऊा नदीरु नीक ऊकाँ निर्वाह कएल (गल छँ (किछु ञ्पवाद छाड़ि) । गँञ्ऽ हमना नऊानिम मैथिलीम कथिग गऊलक ऊ शृंखला छँ गाहिम ञ्ऽी पाथी ञ्छि। सुधांशु (शखन वोधनी, वावा वैद्यनाथ, ञ्नविंद ठाकुन एवं वैकुंठ सा वाद ञ्ऽी पाँवम एहन लाक छथि ऊिनकन नवना कम्प्र महनगिसँ गऊल वनि सकँए। ऊँ हमन वाग निश्चांगऊी लग कहिया पहुँवनि गँ ऊनुन ऊा एहि वागपन (गौन कनथि।

एहि पाथीम शानदा सिह्नाऊीक ञाशीर्ववन की मानि कऽ लल (गल छँ स नहि पगा। ऊँ संगीगक काना पाथीपन शानदाऊीक ववन नहिगनि गँ ऊा मानवाक वाश्चगा हमना नहँग मुदा एहन नँ छँ ऊ शानदा सिह्नाऊीक लिखलासँ काना नवना गऊलम वदलि ऊगँ। कुल मिला कऽ दखी गँ नामश्चनऊीक नवना गऊल गँ नहि छनि मुदा गऊलसँ वसी दुना नहि छनि।

6

" सऊना सिनहिया" कन लखक छथि सगीश साऊन। एहि पाथीम गीग वसी ञ्छि ञा एहन नवना ऊकना गऊल कहल (गल छँ स कम। ऊाना ञ्ऽी सग गऊल छँहा नँ। एहि पाथीम कुल दु टा गुमिका ञ्छि पहिल ञ्ऊिग ञाऊाद ञा दासन लखक कन ञ्पन। ब्रगावगऽ ऊखन गुमिका लखक ञ्ऊिग ञाऊाद छथि ऊा उपन्यासाकँ गऊल कहि सकँग छथि, काना गानी वाग नँ। ञ्ऽी स्पष्ट ञ्छि ऊ एहि पाथीम गऊल विधाक काना नवना नँ ञ्छि।

7

"ब्रद- नाग" सेहो कथित गजल संग्रह धीरेन्द्र प्रेमर्षिजीक संपादनमे प्रकाशित भेल छनि। एहि पोथीमे नेपालक युवा सभहक नवका सभ गजलक नामसँ आएल अछि। एहि युवा सभमेसँ किछु युवा मेहनती भऽ सकै छलाह मुदा ओ सभ प्रेमर्षिजीक पसारल भ्रममे फँसल छथि। आओर हम कि कियो युवा सभकेँ सेहो कहि उत्साहित कऽ सकैत छी जे बलु काल्हि भेने सेहो सभ मेहनति करता। मुदा अपन कमजोरी नुकेबाक अछि तँए युवा सभ मेहनति नै करथि एहेन बात सावव साहित्य संग छल हएत। युवा सभकेँ मेहनति करबाक चाही मुदा एहि संग्रहमे प्रेमर्षिजी अपन भ्रम, अपन कमजोरीकेँ नेपालक युवा लेखकपर लादि देने छथि आ उम्मेद करै छथि जे युवाक कमजोरी बहन्ना हम सुरक्षित बनि जाएब। हिनक किछु भ्रम, कमजोरी आ कुंठा हिनक लिखल भूमिकामे भेटत। पृष्ठ- 13 पर प्रेमर्षिजी लिखै छथि- " तथापि प्रश्न उठैत अछि जे जकरा हम गजल कहि रहल छियैक वा जे नवका सभ एहिमे सन्नहित अछि से की गजल छियैक? जँ आइसँ डेढ़ दशक पहिने सेहो प्रश्न अबैत तँ एक नजरि देखितहिँ कहा कहि, दितए- बिल्कुल, सेहो गजल छियैक। मुदा पछिला समय बगय- बानि आ आन्तरिक गुणवत्तापर मात्र नहि भऽ गजलक गणितपर सेहो किछु काज होबऽ लागल छैक। आ जखन गणितीय सूत्रसभक खाँचपर कोनो नवका रचना नहि बैसैत छैक तँ ओकरा गजल कहबासँ परहेज करएनिहार एकटा जमात सेहो सक्रिय अछि सम्प्रति। ओहि जमातक विचार आ अभियानक सेहो सम्मान करैत छी हम। हमर धारणा अछि जे सूत्रबद्ध काजक अभ्यास कालान्तरमे विशेष गतिशीलताक मार्ग सेहो प्रशस्त करत। कोनो फसलक बीज कतहुसँ आएल हुअए, जाहि जमीनमे ओकरा बूनल गेल छैक ओहि माटिक उर्वराशक्ति एवं रौद- बसात ओकरा जाहि रूपेँ जनमाइ, पनपाइ आ रौदाएमे प्रगट पाड़ैत छैक से ओहि फसलक गुण होइत छैक। सेहो प्राकृतिक नियम छियैक। मैथिली भाषाक अनुरूप, सुगन्ध आ सौष्ठव गजलकेँ कोन रूपेँ अंगेजने अछि आ समय- क्रममे होइत रहल बाउग किंवा रोपनीसँ हरिआइत गजल- वृक्षमे कोन तरहक फल लागल अछि; उएह मैथिली गजलक स्वाद सुआद आ अनुरूप भऽ सकैत छैक। आओर जँ पं. जीवन झा सदृश

प्रासंगिक गजलकारलोकनि अपन मानसक माटिमे सानिकऽ मैथिलीक बाँचनमे गजलक बाउग नहि कएने रहितथि तँ आइ नहि रामदेव, सियाराम झा 'सरस', कलानन्द भट्ट, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डा. राजेन्द्र विमल, डा. तारानन्द वियोगी, रुजलुर्रहमान हाशमी, डा. रामचैतन्य धीरज, जगदीशचन्द्र ठाकुर 'अनिल', डा. धीरेन्द्र धीर, धीरेन्द्र धीरज, जनार्दन ललन, डा. देवशंकर नवीन, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', डा. विभूति आनन्द, डा. रामदेव झा, बाबा वैद्यनाथ, डा. शेफालिका वर्मा, डा. कमलमोहन चुन्नू, डा. नरेन्द्र, रोशन जनकपुरी, अजित आजाद, जियाउर्रहमान जाफरी, अशोक दत्त सदृश रचनाकारलोकनि गजल नामसँ किछु लिखबाक साहस करितथि वा नहि! तँ उल्लिखित साहित्यकारसभक अतिरिक्त सैकड़ा रचनाधर्मी गजलमे कलम नहि उठौने रहितथि तँ राजीवरंजन मिश्र, नवलश्री पंकज, दीपनारायण विद्यार्थी, आशिष अनचिन्हार, मैथिल प्रशान्त, प्रदीप पुष्प, अमित मिश्र, कुन्दनकुमार कर्ण, बालमुकुन्द, अभिलाष ठाकुर, सुमित मिश्र आदिसन रचनाकार आइ नहि गजल अध्ययन- लेखनदिस प्रवृत्त भऽ पबितथि वा नहि।"

हुनकर एहि भूमिकाक शुरुआतमे एहन जमात केर चर्चा करै छथि जे बिना नियम रचनाकेँ गजल कहबासँ परहेज करैए मुदा प्रेमर्षिजीमे एतेक साहस किएक ने छनि जे ओ बिना नाम लिखने चर्चा करै छथि। साहित्यमे छथि तँ एतबो साहस रहबाक चाही प्रेमर्षिजी लग। भूमिकाक दोसर भागमे प्रेमर्षिजी गजलक इतिहासकेँ गलत करबाक कुत्सित प्रयास कएलाह अछि। एहि प्रसंगमे मैथिली गजलक काज सेहो सार्वजनिक अछि आ प्रेमर्षिजीक कथन सेहो हम देलहुँ। पाठक न्याय कऽ लेताह।

एकर अतिरिक्त अही भूमिकामे प्रेमर्षिजी लिखै छथि (पृष्ठ- 14) - "मुदा ओकरा (रचनाकेँ) खारिज करबाक करबाक अधिकार वा सामर्थ्य ककरो नहि रहैत छैक।" एहि कथनक की मतलब छै से हमरा नहि बुझाएल। रचनाकेँ किया खारिज कएल ने सकैए मुदा कोनो रचनाकेँ लेखक जबरदस्ती लेबल लगा कऽ परसबाक प्रयास करै छथि तँ ओहि लेबलकेँ खारिज करबाक अधिकार समीक्षक- आलोचककेँ जरूर देल गेल छै समाज द्वारा। आ तेँ हम

कहवाम काना संकाव नें ञ एहि पाथीक नवना गञलक मापदंडपन नें ञ्छि| छाट कालखंड लल प्रमर्षिजी निमाहि लगाह मूदा रविष्यम जखन महनगी यूवा सरहक खोज नहगें गखन हूनकन काजक नामानिशान नहि ववगनि|

8

" विश्वग्रामक वलिवदीपन" ञ्ली कथिग गञल संग्रह छनि ञ्जिग ञ्जाद कन| एहि पाथीम काना गूमिका नें ञ्छि| ञ्न लाकक कथिग गञलपन लीखए वला, संग्रहम गूमिका लीखए वला ञ्जिगजी ञ्पन संग्रहम काना गूमिका किए न दलाह स वाग ञँ गञलक नामपन किछूउा लीखि दवए वला लाक सर वूमि जाए गँ ञ्धा समस्या उाहीठाम खग्म रइ जगें| एहि संग्रह नवना सर सहा गञल नें ञ्छि|

9

हम पहिनहा कहन छी ञ ब्यक्तिगग गौनपन हमना काना ञ्जाद कि वनवाद नवनासँ दिक्कग नें ञ्छि| एकटा पाठक गौनपन हम उाकना सरकँ पढ़ैग छी| हमना दिक्कग गखन हाइए जखन कि काना विधाक नामपन ग्रम पसानल जाइग छै| ञ्पन कमजानीकँ नूकवाक लल विधाक नियम संग मजाक कएल जाइग छै| उपनम जगक पाथी जगक लखक कन नाम हम गनलहूँ स सर ञ्पन कमजानी नूकवाक लल ग्रम पसानन छथि| ञ्व पवास- सए नवना छै गँ कान न काना नवना कथ्य हिसावँ नीक हुव कनगें, किछू पाँगि नीक लगव कनगें मूदा गकन नाम गञल टा किएक? कविगा नाखि लिञ् नाम जखन नियम कन पालन कनिग नें छी गखन उा गञल काना? नमहन-नमहन गूमिका लिखल जाइए मूदा ञँ एकौ पाँगि उाहिम ञ्पन कमजानीक वानम लीखि दल जाए गँ एहन (थाड़ छै ञ काना पाठक कि काना ञ्लावक लखककँ हाँसी लगा दगें| मूदा ञँ ञ्ली सर ञ्हिना ग्रम पसानैग नहगा गँ काना न काना ञ्लावक हिनका सरकँ नपैग नहग, ञ्ञ ञ्हिना वकान कहैग नहग| लखक ञ्पन कमजानीकँ सार्वजनिक कनैग नवना लीखथि ञ्ली वसी ञ्मानदान उा साहसी काज हगें|

गञल नियम यदि सर लल छै गँ उाकन छूट सहा सर लल छै| मूदा छूटक उपयाग वएह कइ सकैए ञ कि ञ्नूशासिग हाथि| वाँकी ञ्लसी लाक लल

छूट की ञा नियम की?

ञपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ।

३. पद्य खण्ड

३. १. नाञा किशोन मिश्र- कद्दू, उपनाग दिञूड़ ककना?

३. २. शिव कुमान ञा टिल्लू - ३ टा पद्य

३. ३. समगा कुमानी- मिथिला हम्मन

३. ४. ञा जियाउन नहमान ञाफनी- २ टा ञाञाद गञल

३. १. नाज किप्शान मिश्र- कद्रू, उयनाग दिञ्रॣ ककना?

 नाज किप्शान मिश्र, निटायर्ठ वीरु जननल मॅनजन (ॠी) , वी. एस. एन. एल. (मूख्यालय) , दिल्ली, गाम- ञ्रान ठीरु, या. ञ्रान हाट, मधूवनी

कद्रू , उयनाग दिञ्रॣ ककना ?

लय गि मि न - या प्र, छी घूमि नरुल,

एनवा क ञ्रुछि ॠी ॠजा ग सँ,
एनि क' जखन वद्द कर्नेग छी ,
गम एनि जा ॠछ, का ना वउँग सँ।
सँ

ॠजा ग - ञ्रुक्ता नक - सम्बन्ध कॅ
सा मना वय लॅल कहि ऊेक्ति कि नका ?

एहि , जमना ट क लॅल यूनि ,
कद्रू, उयना ग दि ऊेक्ति कि नका ?

वा दनि वि ला ।गलॅ हथि या म,

छै सूखा नहल , खग म धा न,
मघ नि यग्मा एल, (गल कग ' ?
वनसय, दैक धा न म ग्रा घ|

दखि लि उँ, छै कहन एल?
उलवा हक जूनसा हाँ ग, नखना ,
कि नका कहि उेक्नि ? की कहि उेक्नि ?

कदू, उपना ग दि जूॐ ककना ?

पूर्व का लक नी क कगका ,
टूटल उा ॐग जूछि पनम्पना ,

नहि वूसा ॐग जूछि , कि नका कहि उेक्नि ,

कदू , उपना ग दि जूॐ ककना ?

एवाँ ट उमी नक जूढकून म,
उसना ही खग ' पड़ल वखना ,
कदू, उपना ग दि जूॐ ककना ?

लूक्ष्मी गा छ पन जूाम खा धि ,
जूपन सँ कनेछ, वाँ ट- वखना
कदू, उपना ग दि जूॐ ककना ?

जूनूमा ना न ए' पवेग छै,
ए' उगे कखन धनगी - कंपन,

वजि गी नहि छथि , वस्धना ,

ह्ना ङ्गग छक्नि कि एक, काँ पय क मन?

कि नका पूछि ज्रक्नि ? क, की कहगा ?
ङ्ग्री उपना ग, कि एक कि उा सूनगा ?

वजउान वि नू, दूर्गा थ्र ज्रावि ,
कि एक वसा हैग ज्रछि नगड़ा ?
हमना दि स सँ नउँग छलैं की ?
कद्रू , उपना ग दि ज्रङ्ग ककना ?

कएगा ट जूंधवि श्ना सक ब्रा नें,

उगमगा एल, मि थि ला - मा थक या ग,
वैह्ला नि क सा व ज्रनसा हाँ ग छक्नि जि नका ,

दूनकन दूर्गा गक जा गल रा ग|

वि ह्ला न पन वि श्ना स नहि जि नका ,
कद्रू, उपना ग दि ग़ैक्नि कि नका ?

गपग वा ह पि वैग का ल,

या कि जा ङ्गग छक्नि मूह जि नका ,
ज्रहीं कद्रू, उा की कनगा ?
जा क' उपना ग दथि क्र कि नका ?

ना मि - का ड़ि खग ह्म ेा पलङ्कँ,
उगि (गल ञ्ुपनं सँ खगना ,
कङ्घ, उपना ग दि ञ्ुञ्ु ककना ?

सि नरु कगउ सँ घा नि दि ञ्ुञ्ु?
गि लका ठ़, मा छ , मखा न म,
(गल कगउ उा ञ्ुपनेंगी ?
पनसा ञ्ु छल सरक दला न म,

ञ्ुपनेंगी , मा न, हि नदयक रा व ञ्ुछि ,
वढ़ग का ना , कहि ऊेक्कि कि नका ?
कङ्घ, उपना ग दि ऊेक्कि कि नका ?

ञ्ुपन मंगञ्य editorial.staff.videha@gmail.com
पन पठाउ|

३. २. भिव कुमान ज्ञा टिल्लु - ३ टा पञ्य


भिव कुमान ज्ञा टिल्लु

३ टा पञ्य

१
मुनदैया' क कछन म

नजिपूग शासनक काल छल
धम्म' सँ सनागन वेहाल छल
मूनगि नें पूजव मूद्दा -
शनधम् गच्छामि कन ललकान छल !
ेशव शाक्त वेंष्लव आक्राांग छल
रूनाञ्जूग नें न्याय गर्क दर्शन सिद्धाांग छल
गखनें जनमल सीगाक धनगी यन
वनहा सागी ब्रनूपा मूनदेंया क कांखि' सँ
एकटा विलका . .
जाहि सागी म माग्र साउान गद्दा' म यानि
उाकन कछन म नापि दलक न्याय कन कूसूम
रून की गल ? ओी जानथि जगननाथ
सनागन दर्शन कहलकनि ओी विलका नें
आवार्य छथि - सनागन कन नउाक उदयनावार्य
मूद्दा एखन माग्र दर्शन आ वेंशेषिक शोध माग्र कन
विषय जे वनि गेल छथि
वनोंनी क गनल गल शोधक जकाँ
साधा नहल छथि ! ! ! ! !
कांकड़ पाथन गनल अूपन जीहपन
श्रद्धा गवक नान' सँ निग पूजें छनि
उनिग साकू सन कनियन गामक किछू जन - जननी लोकनि

२

अूगुकान्द
टहलि नहल छलहुँ प्रगीगक रूलवानी' म
नंगविनहा रूल कन सूगंधक आनंद लेंग
आकि रूना गेल - एकटा गीग !

साव' लगलहुँ विषय- विमर्श
कथी' पत्र लिखल जाउ. . ?
कागहु वाढ़िक ककत्रास ग' काना' ०ाम
साहाउान साउानक ञानंद
गुकवंदी मिलान कनोग नहलहुँ
लिखि लिखि क' पन्ना रूाड़ोग नहलहुँ
नीक' सँ नीक नववाक प्रयास ऊ छल
कि ञवक ममममा उ०ल ट्ह
लागि ८गल छल माजनक थापन
ञ' न' सँ मान ञपम्याँग
कहलक हीया - छाड़ि न दियौ
रून लिख' लगलहुँ - - ञगुकांग
३
ञविनल म्मृगि (गीग)

वीगल ञध रून घृनिक' ञावय उाकन संग' म दौड़ी ञय
वलु सखी किछ्ु काल' ल नौहन खलव विग्गी कौड़ी ञय !
प्रमक वटकन वावूक हा८थ माय सिनहक ऊंटा ञय
वलु गायसंग रूना कनवो ऊ विसनल उा टंटा ञय
हमना दिश गँ दाङु ०ाढ़ छथि कहथि ञ्ली पागी ८गोनी ञय !
सून ८ग मुनियाँ किउ कनो छं ञा खलं किग्गी किग्गी
ढाढसक ञहिवाग जड़ाक' कहथि हमन छाटका पिग्गी
उहि०ां वहुञासिन वनि ८गलहुँ ञांजून कनम हूलौड़ी ञय !
सासुमाय नहि विधिक धाय छथि प्रमक पथ संघान ञय
ह' म सूगलि छी ञपन सजपन वाह वनावथि गान ञय
ह शिव ऊँघन वटी वनलौं उाहि०ां प्रम गिलौड़ी ञय

ऊ नवनापन ञ्ूपन मंगव्य editi torial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ।

३. ३. समना क्ूमानी- मिथिला हम्मन


ममता कुमारी

मिथिला हम्मर

हम मिथिला के वासी ,

बाजब हम्मर मैथिली अछी।

मंडन मिश्र के आंगन में भारती ,

शंकराचार्य के हरौलन अछी।

विद्यापति लेल जहां महादेव ,

उगना बनी ऐला।

एहन मिथिला गाम हम्मर ,

जहां सीता मां जन्म लेला।

थानेश्वर , कुशेश्वर अछी ,

बाबा के धाम ।

उच्चैठ, श्यामा आ अहिल्या ,

माता के स्थान ।

माछ, दही , पान, मखान ,

अछी भोजन प्रधान।

पाग, खराम से होई छइ ,

हम्मर अप्पन पहचान।

कोशी , कमला , बलान बहै ,
झिझरी , कज्री , सामा गीत।
मधुबनी पेंटिंग विश्वविख्यात ,
आ जाट - जट्टीन खेल।

मिथिला हम्मर जन्मभूमि ,
ई हम्मर पहचान अछी।
सदीखन मिथिला आगु बडा,
मनक इच्छा प्रधान अछी।

समता कुमारी
शिक्षिका, समस्तीपुर, बिहार।

।

- समगा कुमानी, शिजिका, समस्कीपुन, विहान।
ठे नवनायन ञूपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.comपन पठाउ।

३. ४. ञा जियाउन नहमान जाफनी- २ टा ञाजाद गजल

 ञा ञियाउन नहमान ञाफनी

२ टा ञ्राञाद गञल

१

दखव दुनका नूप अूपान
कनव मुदा नहि दुनका पियान

नाधा गोनी ञाङ्ख नहल अछि
ञहाँ प वैसल नंदकुमान

वनखा म नहि पानी गनिका
की प्रकृति क व्यवहान

कवल हमहीं मैथिली वाञव
कनि कनु ग ञहाँ विचान

मुठक दिल्ली की वाञँग अछि
नाञ वढ़ैग अछि ननसंहान

हमहुँ दाषी हमहुँ दागी
सहि नहल छी अन्यावान

नहि साधथि हम एविष्यक लल
नहि हमना म कछु सुधान

२

हम बाजैत छी पियारक गप्प
कोना शुरू संस्कारक गप्प

हमरा नहि समीचीन बुझैत अछि
दिन मे ई अंधकारक गप्प

एक घर मे हम मात्रे छी
संभव नहि उद्धारक गप्प

कन्याक संख्या कम भ होइत
बदलि जाइत इँकारक गप्प

राजनीति के हम जानैत छी
हत्या, खून, संहारक गप्प

हमरा जनि अहाँ रखैत छी
र' जाइत अखबारक गप्प

कोना दशा नहि बाकी रहलक
पापी ई संसारक गप्प

सम्पादकीय टिप्पणी- जियाउर रहमान जाफरी जखन हिंदी- उर्दूमे गजल लिखै छथि तखन पूरा बहर- काफिया रहै छनि मुदा हुनक मैथिलीमे गजलमे बहर नै रहैए। जाफरी जी एकटा हिंदी गजल देखू। ऐ गजलमे २१२२- २१२ केर पालन करै छथि हुनक पाँतिमे आ काफिया ई ध्वनि साम्यताक संग छै।

8:36

ijanmahotsav.blogspot.

Saturday 31 October 2020

तीर है (ग़ज़ल) - डा. जियाउर रहमान जाफरी

तीर है
(ग़ज़ल)
इस तरफ भी तीर है
मसअला गंभीर है

मुश्किलें जितनी रहें
हाथ में तदबीर है

तोड़ना ही है उसे
हाँ मगर ज़ंजीर है

मुस्कुराहट होंठ पर
और दिल में पीर है

हर ग़ज़ल रोती रही
क्या यही तदबीर है

शेर अब उससे बढ़े
कौन रांझा हीर है

डॉ० भावना कुँअर (ऑस्ट्रेलिया)
डॉ. हंसा दीप (कैनेडा)
टेकनारायण रिमाल 'कौशिक' (बर्मा)
अलका 'सोनी'

7

 Like  Comment  Share

- डा जियाउर रहमान जाफरी, प्राध्यापक हिंदी विभाग, मिर्जा गालिब कॉलेज गया बिहार, 823001, 9934847941

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

४. संस्कृत खण्ड

४. १. डा. दीपिका- चम्पूसाहित्यस्य विलासः (द्वितीयोच्छ्वासः)

४. १. डा. दीपिका- वम्पूसाहि॰्यय(॰॥ विलास8 (ि्वीयो्ब्वास8)

वम्पूसाहि॰्यय(॰॥ विलास8

(ि्वीयो्ब्वास8)



डा. दीपिका

(ब्राग्ह्नलखिका वदवगी- महाविॅ्यालयॅ्य ग्राक्हनप्राध्यापिका व)

वम्पूसाहि॰्यडगगि ज्ावार्यग्रिविक्रमरत्नॅ्य नलवम्पू- नाम(धय8 ग्रन्थ8 प्रथमं वम्पूकाव्यम् ज्ञ्ि ्लृगि प्रथिग8 एव। दशमशगाब्द्याम् ज्ॅ्य ग्रन्थॅ्य नवना डागा। ज्ि्मन् ग्रन्थ मुलग8 ग्रिविक्रमरत्नविगा8 सफ- उब्बवासा8 वर्गन्ग। एवं डनश्रुगि8 वर्गग यग् ज्ावार्यग्रिविक्रमरत्न8 वा(ग्वी कृपावशाग् सफ- उब्बवासपर्यन्गमव लखनं कृगवान्। ज्ग8 ग्रन्थाऽयम् ज्पूर्ध8।

गत्र प्रथम उब्बवास विविधविषयाधां वर्धनं वर्गग। ज्ादौ ज्ारुग्य पञ्चविंशगि(श्लाका8 वर्गन्ग। यषु (श्लाकषु शिवॅ्य स्गवनं वर्गग। एवमव कामदवॅ्य वर्धनं, सनत्रग्या०8 स्गवनं, काव्यवैशिष्ट्यं, कुकविनिन्दा, दुर्जननिन्दा, विद्वज्जनानां वन्दना, सज्जनदुर्जनयो8 पार्थक्यम्, ज्ादिकवि स्गुगि8, वदव्यासस्गुगि8, महाराग्गकथावर्धनं, वाधरत्नगुधाग्य्या8 प्रशंसा, संरग(श्लषवैशिष्ट्यादीनां विवनधम् जेषु (श्लाकषु दगवान् ज्ि ज्ावार्य8।

एवमव गॅ्यप्रराग(ग म(ध्य- म(ध्य पॅ्यप्रयागपून्य्हनं कविवंशादिवर्धनम्, ज्ार्यावर्गवर्धनं, निषधापुरीवर्धनं, नलवर्धनं, महामन्त्रिवर्धनं, नृपविलासवर्धनं, वर्षावर्धनं, शुकनाग्याग्गवर्धनं, मृगया- विहान- निश्वयवर्धनं, मृगयावर्धनं, शुकनदर्शनं, शनवर्षधं, द्वन्द्वयुद्धं वर्धनं,

शुकनजया नाह्वा विश्रामवर्धनं, पथिकस्यागमनं, नाह्वाकौतुहलं, विटर्टवर्धनं, नाजपुत्रीवर्धनं, नाह्वश्विन्धावर्धनं, पथिकविसर्जनं, नाजदशावर्धनं प्रगृतीनां विशदनुपध विस्तृतवर्धनम् अस्मिन् ग्रन्थ सन्दृश्यत।

ऊेष् वर्धनेषु ऊ्दस्य्नाथस्यन आर्यावर्तस्य यद्वर्धनम् अस्ति तन्निश्वयन रानतवर्षस्य मुलम्वनुपं प्रस्फौति। यस्य निदर्शनम् अधोलिखितेषु गद्येषु-पद्येषु व द्रष्टुं शक्यत।

अस्ति समस्तविश्वम्नारागरान्नल्लामलीलायमान8, समान8 सव्यतया नाकलोकस्य, ग्रस्यकविकथावध ऊ्व नीनसस्य मनोहन8, रीम ऊ्व रानतालङ्कानभुत8, कान्ताकुवमणुलस्यर्श ऊ्वाग्रणी8 सर्वविषयाणाम्, अनधीकृत व्याकनध ऊ्वादृष्टप्रकृतिनिपातोपसर्गलोपसवर्णविकान8, पशुपतिजटावध ऊ्व विकसितकनककमलकुवलयाञ्चलितनज8 पुञ्जपिञ्जनितहंसावतंसया प्रवुनवलवकीनवक्रवाककानणुवमणुलीमण्डितनीनया रगीनथभुपालकीर्ति-पताकया, स्वर्गगमनसोपानवीथीयमाननिक्षतनङ्गया गङ्गया पुण्यसलिल8 प्लावितश्वनुनरागालङ्कृतेकदेशश्च, सान8 सकलसंसानवक्रस्य, शनण्य8 पुण्यकानिणाम्, आनामो नामधीयककदलीवनस्य, धाम धर्मस्य, आस्पदं सम्पदाम्, आश्रय8 श्रियसाम् आकन8 साधुव्यवहानतन्नानाम्, आवार्यरवनमार्यमर्यादापदशानामार्यावर्तो नाम देश8।

आर्यावर्तस्य प्रजा8 कीदृशा8 ऊ्स्यापि वर्धनम् अत्यन्तं समीवीनतया कृतमिहऽ-

यस्मिन्नवनतधर्मकर्मोपदेशशास्त्रसमस्तव्याधिव्यतिकना8 पुनुषायुषजीविन्य8 सकलसंनसुखरान8 प्रजा8 तथाहि- कृष्णयोगा गाण्डिकापत्नाषु, श्लाटप्रवादा वैयाकनणेषु, संनिपातस्तालेषु, ग्रहसंक्रान्तिर्ज्जोति8शास्त्रेषु, गुणविकानवाद8 सांख्येषु, जयस्थितिषु, गुल्मवृद्धिर्वनभूमिषु, गलग्रहा मत्स्येषु, गणुकोन्नानं पर्वतवनभूमिषु, शूलखसम्बन्धश्चण्डिकायतनेषु, दृश्यत न प्रजासु ॥ यत्र वनुनणोपणशारिता8

सङ्घनामा ॐव ग्रमा8, गुङ्गसलकलरवना8 सर्वत्र नगा ॐव नगनप्रदेशा8, सदावनमण्डनानि नूपुन्नाधीव पुन्नाधि, सदानरागा8 प्ररङ्गना ॐव जना8, प्रियालपनसानाधि यौवनानीव वनानि, विटपिट्टिगाश्वटिका ॐव वाटिका8, निर्वृगिष्ठानानि स्कलत्राधीवङ्ग ऊत्रसम्नाधि, जलाविलऊधा8 पशुपुन्नुषा ॐवाप्रमाधाम्फतागरागा8, कुपिगकपिकुलाकुलिगा लङ्कश्वनकिंकना ॐव रग्नकुम्रकर्धघनञ्चापा8 कुपा8, पीवनाधस8 सनिग ॐव गाव8, सगीव्रगापदाषा8 सूर्यंग्नय ॐव कुलम्नियि8 ॥ यत्र व मनाहानिसानसङ्घङ्गवाम्नग्नुषध ङ्गिगुना वाधिष्ठिगा8 कादम्बनीगग्यवन्धा ॐव दृश्यमानवक्वीरुय8 कदाना8 |

किं वहुना|

नाम्नि सा नगनी यत्र न वापी न पयाधना|

दृश्यग न व यत्र म्नी नवापीनपयाधना॥

ञ्पि व

रवन्नि रुाल्लुन वृऊशाखा विपल्लवा8|

जायन्न न गु लाकम्य कदापि न विपल्लवा8॥

उन्नावर्धनं न कवलं गङ्गालीनरानगम्य वैशिष्ट्यं प्रम्नौगि| समसामयिकनाष्ट्नम्य विनिर्माधम् ञ्पि उन्नाधनागल एव कर्तुं शन्नाग ॐगि निश्चप्रवम्| ञ्यार्यावर्गम्य

देश8 पृथ्रगमाङ्श8 कम्यासौ न प्रिया रवन्|

युन्नाऽनुन्नाशसंपन्नैर्या जनैनिव याजनै8॥

(ञ्नुवर्गग)

ञ्पन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com पन पठाउ|



Videha
e-Learning


Gajendra Thakur